قرآنی قاعده
क़ुर्आनी क़ाइदा
तज्वीद के उसूलों के साथ
मख़ारिजे-हुरूफ़
इख़्फ़ा
इज़्हार
इक़्लाब
इद्ग़ाम
नून क़ुत्नी
शैख़ इदरीस अल आ़सिम
सलीम ख़िलजी

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
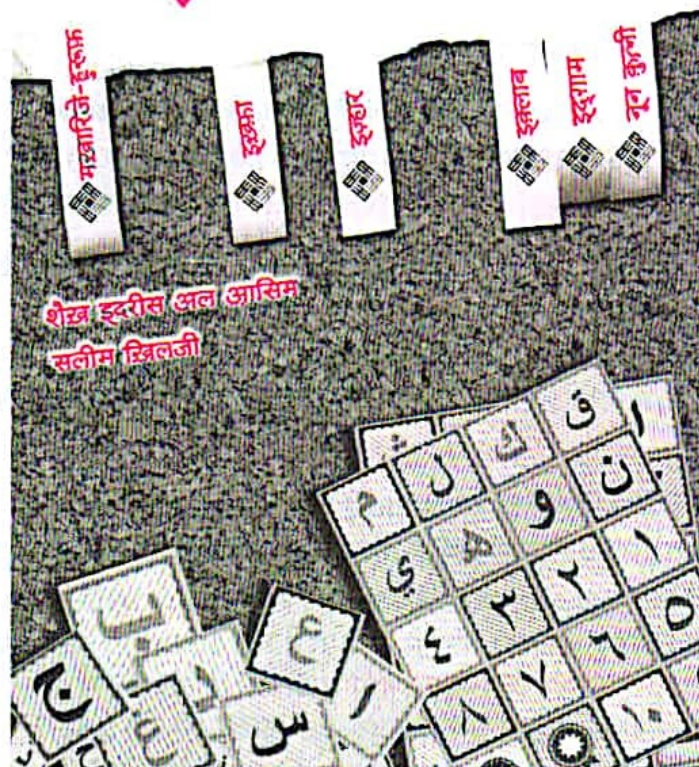
99285 92786
98293 46786
98876 48000

आदर्श मुस्लिम पब्लिकेशन

30 स्टेडियम शॉपिंग सेण्टर, जोधपुर-6

www.publication.adarshmuslim.com

नाम किताब : कुर्आनी क़ाइदा
मुरत्तिब : शैख़ मुहम्मद इदरीस अल आसिम
हिन्दी तर्जुमा, इज़ाफ़ा व सेटिंग : सलीम ख़िलजी
ता'दाद पेज : 72
प्रथम संस्करण : शाबान 1434 हिजरी (जून 2013 ईस्वी)
ता'दाद : 2100
क़ीमत : अनमोल
लेज़र टाइपसेटिंग : ख़लीज मीडिया जोधपुर (+91 98283 46786)
प्रिण्टिंग : आदर्श ऑफ़सेट जोधपुर (+91 97843 46890)
प्रकाशक : आदर्श मुस्लिम पब्लिकेशन
हज हाउस के सामने, 30 स्टेडियम शॉपिंग सेण्टर, जोधपुर-6
मोबाइल नं. : 99285 92786, 98876 48000
website: publication.adarshmuslim.com
email : info@adarshmuslim.com, adarshmuslim@gmail.com

इत्तिला व तआवुन की अपील :

01. कुर्आन मजीद अल्लाह का कलाम है और इस नाते वो अनमोल है. कुर्आन पढ़ना हर मुसलमान पर लाज़मी है और पढ़ना सिखाना हमारी दीनी ज़िम्मेदारी है.
02. कुर्आनी क़ाइदा और अरबी-हिन्दी मतन वाले कुर्आन मजीद का प्रकाशन आदर्श मुस्लिम प्रकाशन जोधपुर ने किया है और आम लोगों तक पहुँचाने का काम आदर्श मुस्लिम फ़ाउण्डेशन जोधपुर की ओर से किया जा रहा है.

लिहाज़ा आप तमाम हज़रात से माली तआवुन की गुज़ारिश है ताकि कुर्आन की ता'लीमात को घर-घर तक पहुँचाने का काम लगातार जारी रखा जा सके. आपकी इस सहयोग राशि का इस्ते'माल काग़ज़, कम्पोज़िंग, प्रिण्टिंग, बाइंडिंग, पैकेजिंग और देश भर में पहुँचाने में लगे बुक सेलर्स, रिटेलर्स व दीगर कार्यकर्त्ताओं पर किया जाएगा. अल्लाह तआला आपको अज्रे-अजीम अता फ़र्माए, आमीन!

सहयोग राशि : प्रति कॉपी	क़ाइदा ₹ 50/-

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पेश-लफ़्ज़

इन्नल ह़म्दलिल्लाहि नह़मदुहु व नस्तईनुहू व नस्तग़फ़िरुह व नऊज़ुबिल्लाहि मिन शुरूरि अन्फ़ुसिना व मिन सय्यिआति अ़अमालिना, मंय्यहदिहिल्लाहु फ़ला मुज़िल्ललहु व मंय्युज़्लिल फ़ला हादि-य लहु व अश्हदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु वह़दहू ला शरीकलः व अश्हदु अन्ना मुहम्मदन अ़ब्दुहु व रसूलुहू, सल्लल्लाहु अ़लैहि व अ़ला आलिहि व अस्ह़ाबिही व अतबाइहि व बारिक व सल्लिम - अम्मा बअ़द.

कुर्आन मजीद की तिलावत का ष़वाब

कुर्आन को ग़ौर करके, समझकर पढ़ने से हिदायत और रहनुमाई मिलती है वहीं इसकी सिर्फ़ तिलावत करने पर भी अल्लाह तआ़ला ने अनगिनत नेकियों और ष़वाब का वा'दा किया किया है। कुर्आन मजीद में इर्शादे बारी तआ़ला है,

* **'जो लोग अल्लाह की किताब की तिलावत करते हैं और नमाज़ क़ायम करते हैं और जो रिज़्क़ मैंने उन्हें दिया उसमें से छुपाकर और खोलकर ख़र्च करते हैं, वे ऐसी तिजारत के उम्मीदवार हैं जिसमें उन्हें कोई घाटा नहीं होगा। अल्लाह तआ़ला उन्हें भरपूर अज्र अता करेगा और अपने फ़ज़्ल से उनके अज्र में बढ़ोतरी भी करेगा; बेशक वो बड़ा बख़्शने वाला और क़द्र करने वाला है।'** (सूरह फ़ातिर : 29-30)
* **'ख़बरदार हो जाओ! दिलों को इत्मीनान अल्लाह के ज़िक्र से मिलता है।'** (सूरह रअ़द : 28)

अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने इर्शाद फ़र्माया,

* **'कुर्आन मजीद की तिलावत में महारत रखने वाला शख़्स, उसके लिखने वाले फ़रिश्तों के साथ है और जो शख़्स कुर्आन की तिलावत में अटकता है और तिलावत में परेशानी महसूस करता है उसके लिये (आम क़ारी के मुक़ाबले) दोहरा ष़वाब है।'** (मुस्लिम)
* **'जिसने अल्लाह की किताब से एक हर्फ़ (अक्षर) पढ़ा, उसके लिये एक नेकी है और एक नेकी का बदला दस गुना है। अलिफ़-लाम्-**

मीम् से मुराद एक हर्फ़ नहीं बल्कि अलिफ़ एक हर्फ़, लाम् एक हर्फ़ और मीम् एक हर्फ़ है।' (तिर्मिज़ी)

कुर्आन मजीद में 3,40,740 हर्फ़ हैं। हर हर्फ़ के बदले दस नेकी का ष़वाब मिलता है। इसका मत़लब यह है कि अगर कोई मुसलमान एक बार पूरा कुर्आन पढ़ ले तो उसे 34,07,400 (चौंतीस लाख सात हज़ार चार सौ) नेकियाँ मिलती हैं। अगर कोई मुसलमान साल में तीन बार पूरा कुर्आन पढ़ ले तो उसके अ़ा'मालनामे में 1,02,22,200 (एक करोड़ दो लाख बाईस हज़ार दो सौ) नेकियाँ लिखी जाएंगी।

ज़रा सोचिये! संजीदगी के साथ ग़ौर कीजिये!! जो लोग कुर्आन पढ़ना नहीं जानते, वे कितने बड़े ष़वाब से मह़रूम हैं।

कुर्आन मजीद के सीखने-सिखाने की फ़ज़ीलत

अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने इर्शाद फ़र्माया,

* 'तुम में से बेहतर वो है जो कुर्आन सीखे और सिखाए।' (बुख़ारी)
* 'लोगों में कुछ लोग अल्लाह वाले हैं।' स़ह़ाबा (रज़ि.) ने पूछा, 'ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ) वे कौन हैं?' आप (ﷺ) ने फ़र्माया, 'कुर्आन (का इल्म रखने) वाले ही अल्लाह वाले हैं, वे उसके ख़ास़ बन्दे हैं।' (इब्ने माजा)

मदरसों की अहमियत

मदरसे दीने-इस्लाम के मज़बूत़ क़िले हैं। अल्लाह के करम से इनके ज़रिये सदियों से तह़फ़्फ़ुज़े-इस्लाम का अहमतरीन काम अंजाम दिया जा रहा है। इन्हीं मदरसों से कुर्आन के क़ारी व ह़ाफ़िज़ और कुर्आन-ह़दीष़ व फ़िक़ह के अ़ालिम तैयार होकर निकलते हैं, जिनकी कोशिशों के नतीजे में इस्लामी इ़ल्म आज भी ज़िन्दा है।

एक वक़्त था जब हर मुस्लिम घर में बच्चों को मदरसे में ता'लीम ह़ास़िल करने के लिये भेजने की रिवायत (परम्परा) थी। बचपन ही में हर बच्चा व बच्ची इस्लामी कलिमात से वाकिफ़ हो जाते थे। लड़कपन की उ़म्र आते-आते अ़रबी मत़न में कुर्आन की तिलावत सीख जाते थे। लेकिन अब वो बात नहीं है।

यह निहायत ही अफ़सोस की बात है कि आज मुसलमानों की महज़ 5 फ़ीसद

आबादी ही मदरसों में ता'लीम ह़ासिल करती है; या'नी 95 प्रतिशत मुस्लिम बच्चे अब मदरसे में पढ़ने नहीं जाते। बहुत से लोग अपने घर आ़लिम या मौलवी स़ाह़ब को बुलवाकर अपने बच्चों को क़ुर्आन पढ़वाते हैं लेकिन उनकी गिनती भी बहुत थोड़ी है।

इस क़ायदे के प्रकाशन का मक़स़द

यह ह़क़ीक़त में बहुत ही अफ़सोसनाक बात है कि मुसलमानों की एक बहुत बड़ी ता'दाद क़ुर्आने करीम से नावाकिफ़ है। बहुत से लोग ऐसे हैं जो क़ुर्आन की तिलावत कर तो लेते हैं लेकिन उसका ह़क़ अदा नहीं कर पाते, या'नी जिस त़रह़ क़ुर्आन को पढ़ना चाहिये उस त़रह़ वो नहीं पढ़ पाते हैं। इसकी अस़ल वजह यह है कि वे क़ुर्आन के क़ायदे से वाकिफ़ नहीं हैं। इनमें एक बड़ी ता'दाद ऐसे लोगों की है जिनकी उ़म्र अब मदरसे में जाकर पढ़ने की नहीं है।

लेकिन यह बात याद रखने के लायक़ है कि अगर हमने क़ुर्आन मजीद को सीखने की त़लब नहीं रखी तो फिर अल्लाह के यहाँ कोई भी उज्र (बहाना) क़ाबिले-कुबूल नहीं होगा।

आज देश में क़रीब-क़रीब सभी लोग हिन्दी भाषा से वाकिफ़ हैं। स्कूलों-कॉलेजों में पढ़ने वाले लड़के-लड़कियों के लिये हिन्दी एक अनिवार्य विषय है। इसी वजह से हमने **हिन्दी मीडियम से अ़रबी क़ुर्आन को पढ़ने की राह हमवार करने की ग़रज़ से** इस क़ायदे को प्रकाशित करने का फ़ैसला किया ताकि हर मुस्लिम मर्द-औ़रत, स़ह़ीह़ त़रीक़े से क़ुर्आने करीम को पढ़ सके। **इस क़ायदे में 31 सबक़ (अध्याय) हैं। अगर हर रोज़ एक सबक़ याद किया जाए तो क़रीब एक महीने में क़ारी (पाठक) क़ुर्आनी ग्रामर (व्याकरण) से वाकिफ़ हो सकता है।**

इस क़ायदे के साथ ही हमने क़ुर्आन करीम के एक ऐसे नुस्ख़े को भी तर्तीब दिया है जिसमें हर अ़रबी लफ़्ज़ के नीचे उसका हिन्दी भाषा में उच्चारण दिया गया है। अच्छी नीयत और लोगों को क़ुर्आन सिखाने के इरादे से हमने इस क़ायदे और क़ुर्आन मजीद के नुस्ख़े को तर्तीब देकर प्रकाशित किया है। हम अल्लाह सुब्हानहू तआ़ला से अच्छे अज्र की उम्मीद रखते हैं।

ख़ैर-अन्देश,

सलीम ख़िलजी

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

ज़िल्मे-तज्वीद की अहमियत

तज्वीद का ज़िल्म, दूसरे तमाम उ़लूम से अफ़ज़ल है, ऐसा इसलिये कि इसका ता'ल्लुक़ कलामे-इलाही से है जो तमाम कलामों से अफ़ज़ल है। कलामे-इलाही की स़ह़ीह़ अदायगी जिस फ़न की ता'रीफ़ (परिभाषा) हो, क़ुर्आने करीम के नूरानी और पाकीज़ा अल्फ़ाज़ जिस ज़िल्म का मर्कज़ी मौज़ूअ़ (केन्द्रीय विषय) हो, आख़िरत में आ'ला मक़ाम पाने की सआ़दत जिस फ़न के साथ जुड़ी हुई हो, उससे बेहतर फ़न भला और कौनसा हो सकता है? इसलिये तज्वीद के मुत़ाबिक़ क़ुर्आन को स़ह़ीह़ त़रीक़े से पढ़ना हर एक के लिये ज़रूरी है। इस ज़िल्म को आम करने के लिये तज्वीदी क़ायदों को तर्तीब दिया जाना और उनकी इशाअ़त करना, आज के दौर की अहम ज़रूरत है।

क़ुर्आन को तज्वीद के ख़िलाफ़, भद्दे त़रीक़े से पढ़ना कलामे-इलाही में नुक़्स़ (कमी) पैदा करने के समान है। कई बार तज्वीद के ख़िलाफ़ ग़लत़ त़रीक़े से पढ़ने से मा'नी में बदलाव आ जाता है, जिससे नमाज़ तक फ़ासिद हो जाती है।

अगर कोई शख़्स़ क़ुर्आन को तज्वीद का ख़याल किये बिना पढ़ता रहेगा तो वो तिलावत की रौनक़ को खो देगा। इसलिये हमारे लिये ज़रूरी है कि हम क़ुर्आन की तिलावत स़ह़ीह़ तर्ज पर करने की फ़िक्र करें और क़ुर्आन को स़ह़ीह़ तर्ज़ पर पढ़ने के लिये सबसे पहले हुरूफ़ का स़ह़ीह़ अदा होना ज़रूरी है। इसलिये जहाँ ज़िल्मे-तज्वीद का ह़ासिल करना फ़र्ज़े-किफ़ाया है, वहीं इसके मुवाफ़िक़ पढ़ना फ़र्ज़े-ऐ़न है।

नोट : इस बात को एक मिस़ाल से समझने की कोशिश कीजिये। एक वाक्य है, **'रूको, मत जाओ'** जिसका मत़लब होगा कि ठहरने के लिये कहना और जाने से रोकना। इसी वाक्य को अगर यूँ कहा जाए, **'रूको मत, जाओ'** तो इसका मत़लब होगा कि आपको जाने के लिये कहा जा रहा है और ठहरने से मना किया जा रहा है। **तीन लफ़्ज़ों के इस वाक्य में अगर वक़्फ़ः (कोमा) की जगह बदल दी जाए तो वाक्य का मा'नी बदल जाता है। अगर तज्वीद के उस़ूलों का ख़याल न रखा जाए तो कुछ क़ुर्आनी आयतों के मा'नी में भी बदलाव आ जाता है।** (-मुतर्जिम व मुरत्तिब हिन्दी क़ायदा)

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

ज़िल्मे-तज्वीद की ता'रीफ़ (परिभाषा)

तज्वीद का लुग़वी मा'नी (शाब्दिक अर्थ) है, **'हर्फ़ों को संवारकर सहीह तर्ज़ पर पढ़ना।'** शरई मा'नों में तज्वीद का मतलब है, **'हर हर्फ़ को उसके मख़ारिजे-असलिया (उच्चारण की वास्तविक जगह) से निकालना और उसकी तमाम लाज़िम सिफ़ात (अनिवार्य गुणों) के साथ हर्फ़ को बेहद ख़ूबसूरत अन्दाज़ में अदा करना।'**

क़ुर्आन की तिलावत के लिये ज़िल्मे-तज्वीद की अहमियत बहुत ज़्यादा है। इसका फ़ायदा यह होता है कि क़ारी, ग़लती से महफ़ूज़ रहते हुए क़ुर्आन को सहीह तरीक़े से पढ़ता है। हर वो शख़्स, जो क़ुर्आन की तिलावत करता है, उसके लिये यह लाज़िम है कि वह तज्वीद का कम से कम इतना ज़िल्म तो सीख ही ले जिसके ज़रिये वो क़ुर्आन की तिलावत के दौरान ग़लती से बच सके।

याद रहे, क़ुर्आनी आयात व हुरूफ़ की सहीह अदायगी के लिये ज़िल्मे-तज्वीद सीखना हर मुसलमान के लिये 'फ़र्ज़े-ऐन (परम कर्त्तव्य)' है और तिलावत में ख़ूबसूरती पैदा करने (हुस्ने-क़िरअत) के लिये ज़िल्मे-तज्वीद सीखना 'फ़र्ज़े-किफ़ाया' है।

ज़िल्मे-तज्वीद की फ़ज़ीलत :

ज़िल्मे-तज्वीद की फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) क़ुर्आने करीम से ता'ल्लुक़ होने की वजह से है जो तमाम कलामों से अफ़ज़ल कलाम और तमाम किताबों से अफ़ज़ल किताब है। इसकी दूसरी फ़ज़ीलत यह है कि यह ज़िल्म अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की ओर से नाज़िल किया गया है। अल्लाह का कलाम होने के नाते क़ुर्आन को पूरी तवज्जुह के साथ सहीह तरीक़े से पढ़ना हमारी चाहत होनी चाहिये।

तज्वीद के अरकान :

तज्वीद के चार अरकान हैं जो कि इस फ़न की असल बुनियाद हैं।

01. हुरूफ़ के मख़ारिज को जानना। या'नी उस जगह की पहचान करना जहाँ

से हुरूफ़ सहीह तर्ज़ पर अदा होता है।

02. हुरूफ़ की सिफ़ात को जानना।

03. हुरूफ़ के अहकाम को जानना या'नी मिलकर आने की सूरत में उसके क़ाइदे को जानना; जैसे, इख़्फ़ा, इद्ग़ाम, इज़हार वग़ैरह।

04. ज़बान को इस बात का आदी बनाना कि वो हर हर्फ़ को सहीह ढंग से अदा कर सके।

क़ुर्आन की तिलावत के अन्दाज़ :

क़ुर्आन की तिलावत के तीन अन्दाज़ हैं ,

01. **तर्तील :** क़ुर्आने करीम में इर्शादे बारी तआला है,

'.....व रत्तिलिल क़ुर्आना तर्तीला (तर्जुमा) **और क़ुर्आन को ठहर-ठहरकर पढ़ा करो।'** (सूरह मुज़्ज़म्मिल : 4)

तज्वीद के क़ायदे की रिआयत के साथ ठहर-ठहरकर क़ुर्आन को पढ़ना, मद्दात को पूरे तौर पर अदा करना, तर्तील कहलाता है।

02. **तदवीर :** तज्वीद के क़ायदे की रिआयत रखते हुए, न बहुत ज़्यादा जल्दी और न बहुत ज़्यादा धीरे पढ़ना या'नी दर्मियानी (मध्यम) तरीक़े से हुरूफ़ व मद्दात को पढ़ना तदवीर कहलाता है।

03. **हदर :** तज्वीद के क़ायदे की रिआयत के साथ जल्दी-जल्दी मगर साफ़ समझ में आने वाले अन्दाज़ में इस तरह पढ़ना कि हुरूफ़ व हरकत बख़ूबी ज़ाहिर हो जाएं, न तो एक-दूसरे से मिलें और न कटें, यह तरीक़ा हदर कहलाता है। इस तरीक़े से रमज़ान के महीने में तरावीह के दौरान क़ुर्आन की तिलावत की जाती है।

जो लोग इस तर्ज़ या'नी हदर के तरीक़े से क़ुर्आन की तिलावत करते हैं, उनके लिये यह लाज़िम है कि वा इस बात का सख़्ती से ख़याल रखें कि तज्वीद और औक़ाफ़ (ठहरने के मक़ामात) के तमाम हुक़ूक़ का ख़याल रखें। ऐसा एहतियात न किये जाने पर क़ुर्आन के ग़लत पढ़े जाने का शदीद (ज़्यादा) अंदेशा है।

सबक़ नं. : 2

ज़िल्मे-तज्वीद से जुड़ी कुछ अहम जानकारियाँ

इस सबक़ में तज्वीद से ता'ल्लुक़ रखने वाले कुछ ख़ास़ उसूलों व लफ़्ज़ों का मा'नी (अर्थ) समझाया गया है। तमाम स्टुडेंट्स को चाहिये कि इस सबक़ को ख़ास़ तवज्जुह के साथ पढ़ें और अल्फ़ाज़ के मा'नी ज़रूर याद रखें क्योंकि आगे आने वाले अस्बाक़ (अध्यायों) में उनका बार-बार ज़िक्र आएगा।

01. मख़रज : मुँह में जिस मक़ाम (स्थान) से ह़र्फ़ की स़ह़ीह़ आवाज़ निकले, उसे मख़रज कहते हैं। मख़रज और स़िफ़ात के साथ ह़र्फ़ अदा करने को तज्वीद कहते हैं।

02. लह़न : तज्वीद के उस़ूलों के ख़िलाफ़ क़ुर्आन की तिलावत करने को लह़न कहते हैं। लहन की दो क़िस्में हैं,

(1) लह़ने जली : इसका मत़लब है बड़ी ग़लती, या'नी वो भारी व संगीन गलत़ी, जिसको तज्वीद को जानने वाला और न जानने वाला हर ़आम आदमी समझ ले। जैसे एक ह़र्फ़ की जगह दूसरा ह़र्फ़ पढ़ दिया, मिस़ाल के त़ौर पर اَلْحَمْدُ **अल्ह़म्दु** की जगह اَلْهَمْدُ **अल्हम्दु** (बड़ी ह़ा की जगह छोटी हा का इस्ते'माल और اَلْقَدْرِ **अल् क़द्रि** की जगह اَلْ كَدْرِ **अल् कद्रि** (या'नी बड़े क़ाफ़ की जगह छोटा काफ़) पढ़ देना। इसी त़रह़ एक ह़रकत की जगह दूसरी ह़रकत से लफ़्ज़ को पढ़ना भी लहने जली कहलाता है। मिस़ाल के त़ौर पर نَعْبُدُ **नअ़्बुदु** की जगह نَعْبُدَ **नअ़्बुद** और اَنْعَمْتَ **अन्अ़म्त** की जगह اَنْعَمْتُ **अन्अ़म्तु** पढ़ना। लह़ने जली की तीसरी क़िस्म है, आयत में किसी ह़र्फ़ की जगह को बदल देना। मिस़ाल के त़ौर पर لَمْ يَلِدْ **लम् यलिद्** की जगह لَمْ يُوْلِدْ **लम् यूलिद्** और لَمْ يُوْلِدْ **लम यूलिद्** की जगह لَمْ يَلِدْ **लम् यलिद्** पढ़ना।

लह़ने जली के साथ क़ुर्आन को पढ़ना ह़राम है, जबकि पढ़ने वाला अपनी इस़्लाह की कोशिश भी न करे। अगर कोई लह़ने जली के साथ क़ुर्आन पढ़ रहा हो, सुनने वाला समझ रहा हो और इसके बावजूद उसे न रोके तो सुनना भी ह़राम है। अगर

कोई इन्सान अपनी पूरी ताक़त से लगातार कोशिश करे लेकिन उसके मुँह से हर्फ़ सहीह अदा न हो सकें तो ये उसके लिये शरअी उज़्र है और उसका मामला अल्लाह के सुपुर्द है। बहरहाल बचने की कोशिश करना वाजिब है।

(2). लहने ख़फ़ी : उस छोटी व हल्की ग़लती को कहते हैं जिसको आम आदमी न समझ सके, बल्कि अिल्मे-तज्वीद से वाकिफ़ शख़्स ही पकड़ सके। जैसे हुरूफ़ की सिफ़ाते मुहसिना की ग़लती करना, पुर की जगह बारीक और बारीक की जगह पुर हर्फ़ पढ़ना। इसी तरह इख़्फ़ा की जगह इज़हार और इज़हार की जगह इख़्फ़ा के तरीक़े से पढ़ना। मद्द की मिक़्दार में कमी या ज़्यादती करना।

लहने ख़फ़ी के साथ कुर्आन पढ़ना और इस्लाह की कोशिश न करना, मकरूह है। इसी तरह कोई सुन रहा हो और समझते-बूझते हुए उसे न टोके तो सुनना भी मकरूह है। लहने ख़फ़ी से बचना सुन्नत है।

नोट :

(1). किसी हर्फ़ की सिफ़ते आरिज़ा (अस्थाई गुण) में कमी करना लहने ख़फ़ी है और किसी हर्फ़ की सिफ़ते लाज़िमा (अनिवार्य गुण) में कमी करना लहने जली है।

(2). लहने जली के मुक़ाबले में लहने ख़फ़ी छोटी ग़लती है, मगर इसे छोटी ग़लती समझकर लापरवाही बरतना और इस्लाह की कोशिश न करना, बड़ी ग़लती है।

03. दाँतों की क़िस्में : अरबी हुरूफ़ को सहीह अदा करने का ता'ल्लुक़ जिस तरह हलक़, ज़बान व होंठों से है उसी तरह हुरूफ़ की सहीह अदायगी में दाँतों का भी अहम रोल है। मख़ारिज को समझने में आसानी हो इसके लिये दाँतों के नाम व उनकी पहचान बयान की जा रही है।

(1). ष़नाया : इन्सान के जबड़े में बत्तीस दाँत होते हैं, सोलह ऊपर और सोलह नीचे। सामने की ओर ऊपर वाले दो दाँतों को **ष़नाया उल्या** और नीचे वाले दो दाँतों को **ष़नाया सुफ़ला** कहते हैं।

(2). रुबाया : ष़नाया के बाज़ू में ऊपर-नीचे दोनों तरफ़ वाले एक-एक दाँत को रुबाया कहते हैं।

(3). इनयाब : रुबाया के पास, ऊपर-नीचे दोनों ओर एक-एक नोकदार दाँत

है, इनको इनयाब कहते हैं।

(4). ज़वाह़िक : इनयाब के पास, ऊपर-नीचे दोनों ओर एक-एक दाँत, उनको ज़वाह़िक कहते हैं।

(5). त़वाह़िन : ज़वाहिक के पास, ऊपर-नीचे दोनों ओर के तीन-तीन दाँतों को त़वाह़िन कहते हैं।

(6). नवाजिज़ : त़वाह़िन के पास, ऊपर-नीचे दोनों ओर, जबड़े की आख़िरी एक-एक दाढ़ को नवाजिज़ कहते हैं।

नोट : आम बोलचाल की भाषा में ष़नाया, रुबाया, इनयाब को दाँत और ज़वाह़िक, त़वाह़िन, नवाजिज़ को अ़रबी में इज़रास और हिन्दी-उर्दू में दाढ़ कहते हैं।

04. अलिफ़ और हम्ज़ा में फ़र्क़ :

(1). अलिफ़ हमेशा बग़ैर झटके के, साकिन, सीधा और नरम अदा होता है। जैसे, قَالَ **क़ाल।**

(2). अलिफ़ से पहले हमेशा ज़बर आता है। हम्ज़ा से पहले ज़बर, ज़ेर और पेश तीनों क़िस्म की ह़रकतें आती हैं।

(3). अलिफ़ शुरू में नहीं आता, सिर्फ़ दरम्यान (बीच) और आख़िर में आता है, हम्ज़ा शुरू, दरम्यान और आख़िर तीनों जगह आता है।

नोट : अगर किसी लफ़्ज़ के शुरू में अलिफ़ लिखा हुआ हो तो उसे हम्ज़ा की तर्ज़ पर पढ़ा जाना चाहिये।

05. पुर व बारीक ह़र्फ़ : पुर का मत़लब है ह़र्फ़ को भारी आवाज़ में अदा करना और बारीक का मत़लब है ह़र्फ़ को नर्म व पतली आवाज़ में अदा करना।

(1). हर ह़ाल में पुर पढ़े जाने वाले हुरूफ़ की ता'दाद सात हैं। ये सात ह़र्फ़ यह हैं, **..ظ ज़ा, ق क़ाफ़, ط त़ा, غ ग़ैन, ص स़ाद, ض ज़ाद, خ ख़ा।**

(2). हमेशा बारीक पढ़े जाने वाले हुरूफ़ की ता'दाद 19 है। ये हुरूफ़ हैं, **ب बा, ت ता, ث ष़ा, ج जीम, ح ह़ा, د दाल, ذ ज़ाल, ز ज़ा, س सीन, ش शीन, ع अ़ेन, ف फ़ा, ك काफ़, م मीम, ن नून, و वाव, ه हा, ء हम्ज़ा, ی या।**

(3). कभी पुर तो कभी बारीक पढ़े जाने वाले हुरूफ़ की ता'दाद तीन हैं।

ا अलिफ़ लफ़्ज़ الله अल्लाह का ل लाम ر रा

नोट : अलिफ़ से पहले पुर हर्फ़ हो तो अलिफ़ पुर पढ़ा जाएगा, जैसे قَالَ **क़ाल।** अलिफ़ से पहले बारीक हर्फ़ हो तो अलिफ़ बारीक होगा, जैसे مَاكَانَ **माकान।** लफ़्ज़ अल्लाह के लाम से पहले ज़बर या पेश हो तो लाम हमेशा पुर पढ़ा जाएगा, जैसे وَاللهِ **वल्लाह,** رَسُوْلُ اللهِ **रसूलुल्लाह।** अगर लाम से पहले ज़ेर हो तो लफ़्ज़ अल्लाह का लाम बारीक पढ़ा जाएगा, जैसे لِلّٰهِ **लिल्लाह,** فِي اللهِ **फ़िल्लाह** वग़ैरह।

06. गुन्ना : नाक में आवाज़ ले जाने को गुन्ना कहते हैं।

07. वस्ल : इसका मतलब होता है, किसी बिना रूके पढ़ना।

08. वक़्फ़ः : या'नी किसी लफ़्ज़ पर रूकना, ठहरना या साँस तोड़ना।

09. सक्तः : लफ़्ज़ की अदायगी के बाद सांस न तोड़ते हुए रूकना और ठहरना।

10. क़लक़ला : इसका मतलब होता है, टकराना। पाँच हुरूफ़ ऐसे हैं कि जब इन पर जज़म हो तो इनकी आवाज़ दूसरे मख़रज से टक्कर खाकर अलग हो जाती है, इसी को क़लक़ला कहते हैं। ये पाँच हुरूफ़ हैं, ب **बा,** ج **जीम** د **दाल,** ط **ता,** ق **क़ाफ़।**

11. मा'रूफ़ व मजहूल : अल्फ़ाज़ को अरबों की तर्ज़ पर पढ़ना मा'रूफ़ तरीक़ा कहलाता है जबकि अजमियों (ग़ैर अरबी लोगों) के तरीक़े से पढ़ना मजहूल तरीक़ा कहलाता है। मिसाल के तौर पर जिस हर्फ़ के नीचे ज़ेर लगता है उसे अहले अरब **'इ'** के रूप में पढ़ते हैं जबकि ग़ैर-अरब उसका तलफ़्फ़ुज़ **'ए'** करते हैं। लफ़्ज़ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ पढ़ने का मा'रूफ़ तरीका है, **'इह्दिनस्सिरातल् मुस्तक़ीम।'** जबकि इसे **'एह्दिनस्सिरातल् मुस्तक़ीम'** पढ़ना मजहूल होगा। इसी तरह जिस हर्फ़ पर पेश लगता है उसे मा'रूफ़ तरीक़े से **'उ'** पढ़ा जाता है लेकिन मजहूल तरीक़े में उसे **'ओ'** पढ़ते हैं। जैसे قُلْ هُوَ اللهُ اَحَدٌ पढ़ने का मा'रूफ़ तरीक़ा है, **'कुल हुवल्लाहु अहद'** जबकि इसे **'कुल होवल्लाहो अहद'** पढ़ना मजहूल होगा। कुर्आन अरबी कुरैश लोगों की ज़बान में नाज़िल हुआ है इसलिये उसे मा'रूफ़ तरीक़े से ही पढ़ना चाहिये।

सबक़ नं. : 3

अ़रबी ह़र्फ़ (वर्णमाला)

01. अ़रबी वर्णमाला में 29 ह़र्फ़ (अक्षर) हैं। अ़रबी भाषा दाँये से बाँये (राइट टू लेफ़्ट) पढ़ी और लिखी जाती है। जबकि संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेज़ी समेत अनेक भाषाएं बाँये से दाँये (लेफ़्ट टू राइट) पढ़ी और लिखी जाती है।

02. कुछ ह़र्फ़ (अक्षर) मिलते-जुलते नज़र आते हैं, मगर नुक़्तों से उनकी पहचान की जाती है। जैसे एक नुक़्ता (•) जो कभी ह़र्फ़ के ऊपर होता है, तो कभी ह़र्फ़ के नीचे होता है, जैसे, ب خ ذ ز ض غ ف

03. दो नुक़्ते वाले ह़र्फ़; जैसे, ق ي तीन नुक़्तों वाले ह़र्फ़; जैसे, ث ش

सबक़

ح	ج	ث	ت	ب	ا
ह़ा = ह़	जीम = ज	ष़ा = ष़	ता = त	बा = ब	अलिफ़=अ
س	ز	ر	ذ	د	خ
सीन = स	ज़ा = ज़	रा = र	ज़ाल = ज़	दाल = द	ख़ा = ख़
ع	ظ	ط	ض	ص	ش
अ़ैन = अ़	ज़ा = ज़	त़ा = त़	ज़ाद = ज़	स़ाद = स़	शीन = श
م	ل	ك	ق	ف	غ
मीम् =म	लाम = ल	काफ़ = क	क़ाफ़ = क़	फ़ा = फ़	ग़ैन = ग़
	ى	ء	ه ھ	و	ن
	या = य	हम्ज़ा = अ	हा = ह	वाव = व	नून = न

सबक़ नं. : 4

उर्दू ह़र्फ़ (वर्णमाला)

अ़रबी भाषा बहुत पुरानी है। क़ुर्आन के नाज़िल होने से पहले से यह भाषा जज़ीरा-ए-अ़रब में प्रचलित थी। जब इस्लाम भारतीय उप-महाद्वीप में आया और मुसलमान देश के ह़ाकिम (शासक) बने तो अ़रबी देश की ता'लीमी ज़बान बनी। लेकिन राजभाषा के त़ौर पर तुर्की व फ़ारसी भी चलन में रही। उन दिनों भारत के हिन्दुओं की धार्मिक भाषा संस्कृत थी और उत्तर भारत की आ़म जनता के बीच अवधी, ब्रज, पाली, खड़ी बोली तथा दक्षिण भारत में दक्षिण भारतीय भाषाएं चलन में थी। **ग़ौरतलब है कि उन दिनों हिन्दी भाषा का कोई वजूद नहीं था।**

मुग़लकाल में आ़म जनता से जुड़ाव की कमी मह़सूस की गई। **सल्त़नत के फैलाव के साथ एक कॉमन भाषा बनाने के इरादे से अ़रबी, फ़ारसी, तुर्की और भारतीय भाषाओं के मिश्रण से एक नई ज़बान (भाषा) वजूद में आई, जिसे उर्दू कहते हैं।** इसलिये यह कहना ग़लत़ नहीं होगा कि उर्दू भारतीय भाषा है क्योंकि इसका जन्म भारत ही में हुआ है।

01 : अ़रबी की त़रह़ उर्दू भी दाँये से बाँये पढ़ी और लिखी जाती है।

02 : कुछ ह़र्फ़ (अक्षर) अ़रबी में नहीं हैं, उनकी पूर्ति के लिये उर्दू भाषा की वर्णमाला में नये अक्षर शामिल किये गये; जैसे, پ ٹ چ ڑ ژ گ ے

03 : अ़रबी में संयुक्त अक्षर नहीं होते लेकिन संस्कृत-हिन्दी में होते हैं जैसे द्य (द्+य), द्व (द्+व), ज्ञ (ग्+य), क्ष (क+श) आदि। भारतीय जनता की बोली के मुत़ाबिक़ उर्दू ज़बान में भी कुछ ऐसे संयुक्त अक्षर बनाए गये; जैसे

بھ پھ تھ ٹھ جھ چھ ڈھ کھ گھ

04 : आ़म त़ौर पर यह धारणा है कि उर्दू आसान है और अ़रबी मुश्किल; जबकि ह़क़ीक़त में ऐसा नहीं है। ज़ेर, ज़बर, पेश जैसे निशानात की वजह से अ़रबी को आसानी से पढ़ा जा सकता है लेकिन उर्दू भाषा में लिखते समय इन निशानों का इस्ते'माल नहीं किया जाता। अ़रबी लफ़्ज़ دھر दहर को उर्दू में धर पढ़ा जाता है और दहर को इस त़रह دہر लिखा जाता है। **छोटी ह़ा** का यह रूप ہ उर्दू वालों की ईजाद है, यह रूप अ़रबी में नहीं पाया जाता।

तर्तीबवार उर्दू हुरूफ़ (क्रमबद्ध उर्दू वर्णमाला)

ا अलिफ़=अ

ج जीम = ज	ث षे = ष	ٹ टे = ट	ت ते = त	پ पे = प	ب बे = ब
ذ ज़ाल = ज़	ڈ डाल = ड	د दाल = द	خ ख़े = ख़	ح हे = ह	چ चे = च
ش शीन = श	س सीन = स	ژ ज़े = ज़	ز ज़े = ज़	ڑ ड़े = ड़	ر रे = र
غ ग़ैन = ग़	ع अ़ैन = अ़	ظ ज़ोय = ज़	ط त़ोय = त़	ض ज़ाद = ज़	ص स़ाद = स़
م मीम = म	ل लाम = ल	گ गाफ = ग	ک काफ़ = क	ق क़ाफ़ = क़	ف फ़े = फ़
ے ये = ये, ऐ	ی ये = य, ई	ء हम्ज़ा = अ	ھ ہ हे = ह	و वाव = व	ن नून = न

मिलकर बने हुरूफ़ (संयुक्त अक्षर)

	پھ = ھ + پ फ = हे + पे	بھ = ھ + ب भ = हे + बे
جھ = ھ + ج झ = हे + जीम	ٹھ = ھ + ٹ ठ = हे + टे	تھ = ھ + ت थ = हे + ते
ڈھ = ھ + ڈ ढ = हे + डे	دھ = ھ + د ध = हे + दाल	چھ = ھ + چ छ = हे + चे
گھ = ھ + گ घ = हे + गाफ	کھ = ھ + ک ख = हे + काफ	ڑھ = ھ + ڑ ढ़ = हे + ड़े

सबक़ नं. : 5

मख़ारिजे-हुरुफ़ (अक्षरों का उद्गम)

خ غ ख़ा ग़ैन	ح ع हा अ़ैन	ه ء हा हम्ज़ा
ये ह़र्फ़ ह़लक़ के अगले ह़िस़्से से अदा होते हैं	ये ह़र्फ़ ह़लक़ के बीच वाले ह़िस़्से से अदा होते हैं	ये ह़र्फ़ ह़लक़ के आख़री ह़िस़्से से अदा होते हैं
ض ज़ाद	ى ش ج या शीन जीम	ك ق काफ़ क़ाफ़
ये ह़र्फ़ ज़बान की करवट और ऊपर वाली दाढ़ की जड़ से अदा होते हैं	ये ह़र्फ़ ज़बान के बीच और तालू के मिलने से अदा होते हैं	ये ह़र्फ़ ज़बान की जड़ और तालू से अदा होते हैं
ث ذ ظ स़ा ज़ाल ज़ोय	ت د ط ता दाल त़ोय	ر ن ل रा नून लाम
ये ह़र्फ़ ज़बान की नोक और ऊपर सामने वाले दातों के किनारों से अदा होते हैं	ये ह़र्फ़ ज़बान की नोक और सामने वाले दाँतों की जड़ से अदा होते हैं	ये ह़र्फ़ ज़बान के किनारों और ऊपर वाले दाँतों के मसूढ़े से अदा होते हैं
ا अलिफ़	و م ب ف वाव मीम बा फ़ा	س ز ص सीन ज़ा स़ाद
ये ह़र्फ़ मुँह के ख़ाली ह़िस़्से से अदा होते हैं	ये चारों हुरूफ़ होठों से अदा होते हैं	ज़बान की नोक, सामने ऊपर नीचे के दो दाँतों के अन्दरूनी किनारों से अदा होते हैं

ये सबक़ स्टुडेण्ट को अच्छी त़रह याद करना चाहिये। इस सबक़ में ह़र्फ़ों के ग्रुप उनके मख़ारिज के मुत़ाबिक़ बनाए गये हैं। स़हीह तलफ़्फ़ुज़ (उच्चारण) के लिये अगले पेज पर दी गई तस्वीरों को देखें।

हुरुफ़ का मख़रज, तस्वीरों में
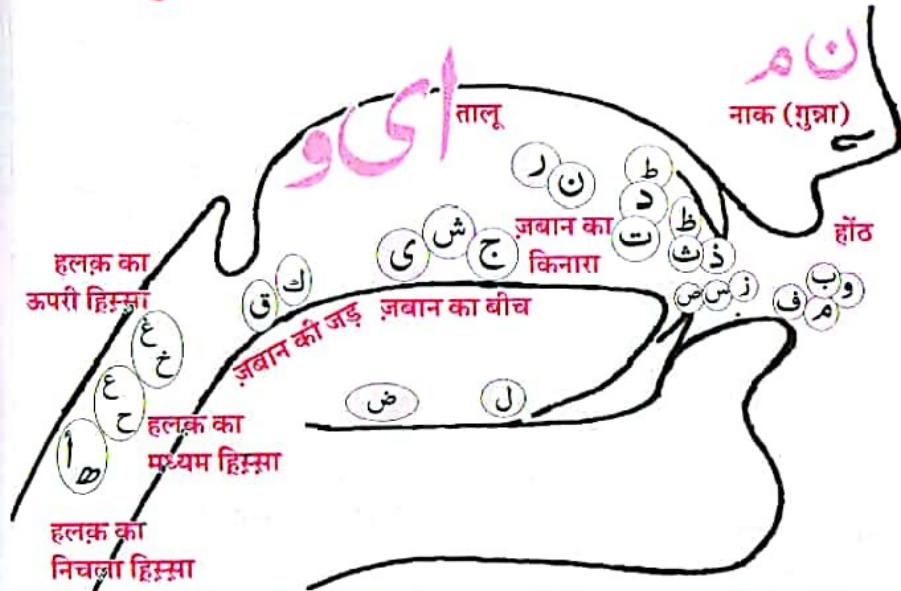
मख़रज नम्बर : 1

मुंह का ख़ाली हिस्सा, इससे तीन हुरूफ़, 'अलिफ़', 'वाव', 'या' अदा होते हैं. ا و ی

मख़रज नम्बर : 2,3,4

2. हलक़ के मुंह की तरफ़ वाले हिस्से से 'ख़ा', 'ग़ैन'
3. हलक़ का बीच वाला हिस्से से 'हा', 'अैन'
4. सीने की तरफ़ वाले हिस्से से 'हा' व 'हम्ज़ा अदा होते हैं.

غ خ → ऊपरी हिस्सा
ع ح → मध्यम हिस्सा
ء ه → निचला हिस्सा

इन छह हुरूफ़ को हुरूफ़े हलक़ी कहते हैं.

ق
ك

मख़रज नम्बर : 5

ज़बान की जड़ जब कव्वे की जड़ के क़रीब से नर्म तालू से लगे तो उससे 'क़ाफ़' अदा होता है.

मख़रज नम्बर : 6

क़ाफ़ की जगह से थोड़ा नीचे से 'काफ़' अदा होता है.

मख़रज नम्बर : 7
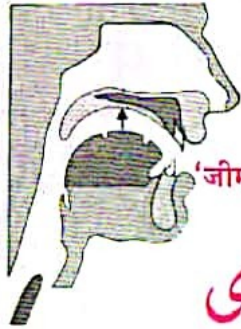
ज़बान के बीच का हिस्सा जब तालू से लगे तो 'जीम', 'शीन', 'या' अदा होते हैं.

ج ش ی
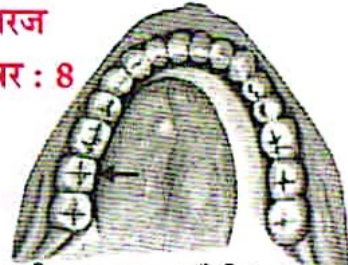
मख़रज नम्बर : 8

ज़बान की करवट जब बाँयी तरफ़ वाली ऊपर की पाँच दाढ़ से लगे तब 'ज़ाद' अदा होता है.

ض

मख़रज नम्बर : 9

ل
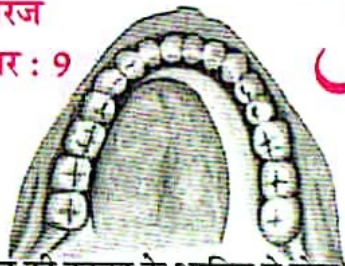
ज़बान की करवट के आख़िर से नोक तक का हिस्सा, जब ऊपर एक दाढ़ और दाँतों के मसूढ़ों से लगे तब 'लाम' अदा होता है.

मख़रज नम्बर : 10

'लाम' की जगह से लेकिन एक दाढ़ कम होकर जब ऊपर वाले तीन दाँतों के मसूढ़ों से लगे तो 'नून' अदा होता है.

ن

मख़रज नम्बर : 12

ط ت د

ज़बान की नोक जब ऊपर सामने वाले दाँतों की जड़ से लगे तो उससे 'ता', 'दाल', 'त़ा' अदा होते हैं.

मख़रज नम्बर : 13

ظ ذ ث

ज़बान की नोक जब ऊपर वाले दाँतों के सिरे से लगे तो उससे 'स़ा', 'ज़ाल', 'ज़ा' अदा होते हैं.

मख़रज नम्बर : 11

ر

ज़बान के किनारे की पुश्त जब ऊपर वाले तीन दाँतों से लगे तब 'रा' अदा होता है.

मख़रज नम्बर : 14

ز س ص

ज़बान की नोक से जब ऊपर-नीचे के अगले दोनों दाँत आपस में मिले तो उससे 'ज़ा', 'सीन', 'स़ाद' अदा होते है.

मख़रज नम्बर : 15

ऊपर वाले दाँतों का सिरा और नीचे के होंठ का अंदरुनी हिस्सा मिलने से 'फ़ा' अदा होता है. ف

मख़रज नम्बर : 16

बन्द होंठों के अगले हिस्से से 'बा' अदा होता है. ب
बन्द होंठों के खुश्क हिस्से से 'मीम' अदा होता है. م

मख़रज नम्बर : 17

दोनों होंठों को गोल करने से 'वाव' अदा होता है. و

मख़रज नम्बर : 18

ن

दोनों होंठों को गोल करके, नाक में आवाज़ ले जाकर 'नून' अदा होता है.

ض 'ज़ाद' या 'दाद'

अरबी के कुछ हर्फ़ हिन्दी में नहीं हैं, इसलिये उनको हिन्दी में कैसे लिखा जाए, यह अहले इल्म के लिये काफ़ी अर्से तक विचारणीय विषय रहा। बहुत से आलिम अब भी इस बात के क़ायल नहीं हैं कि कुर्आन के अरबी मतन को हिन्दी के अनुरूप ढाला जाए। उनका मानना है कि हिन्दी वर्ज़न में अरबी का सहीह तलफ़्फ़ुज़ (उच्चारण) मुमकिन नहीं है। **यह सच है कि दुनिया की कोई भी भाषा, अरबी ज़बान का विकल्प नहीं हो सकती।**

ض अरबी ज़बान का सबसे मुश्किल (टिपिकल) हर्फ़ है। ऊपर दी गई तस्वीरों को देखने से पता चलता है कि **इसका मख़रज सबसे अलग है।** इसकी आवाज़ **'ज़'** और **'द'** के **बीच की आवाज़** होती है। अगर हम अरबी क़ारियों की आवाज़ में कुर्आन की तिलावत सुनें तो हमें ض की आवाज़ **'द'** से मिलती-जुलती सुनाई देती है लेकिन वो د **'दाल'** जैसी नहीं होती बल्कि उससे कुछ अलग क़िस्म की होती है। भारत में ض को आम तौर पर **'ज़'** की तर्ज़ पर बोला जाता है; मिसाल के तौर पर, رمضان **रमज़ान**, رضا **रज़ा**, رضوی **रज़वी**, رضوان **रिज़वान**, مرض **मर्ज़**, غرض **ग़रज़** वग़ैरह।

नीचे टेबल में अ़रबी ह़र्फ़ों के लिये प्रयोग किये गये हिन्दी अक्षरों का विवरण दिया गया है। अ़रबी के जो ह़र्फ़ हिन्दी में नहीं है उनको हिन्दी अक्षर के नीचे नुक्ते लगाकर प्रतीक के रूप में दर्शाया गया है। **हमारी गुज़ारिश है कि आप क़ुर्आन की तिलावत करते समय मूल अ़रबी ह़र्फ़ को अपने ज़हन में रखें। कुछ लोगों ने अ़रबी ह़र्फ़ के लिये 'ष़' के इस्ते'माल पर ए'तिराज जताया है, उनसे हमारी गुज़ारिश यही है कि हमने इसे एक प्रतीक (सिम्बल) के रूप में इस्ते'माल किया है। सच तो यह है कि हिन्दी में किसी भी ह़र्फ़ के नीचे बिन्दी लगाई ही नहीं जाती है। हिन्दी के जितने भी अक्षर बिन्दी लगाकर दर्शाए गये हैं, वे प्रतीक मात्र हैं। हम एक बार फिर यही गुज़ारिश करते हैं कि पढ़ते वक़्त प्रतीकात्मक अक्षर को देखकर मन में अ़रबी ह़र्फ़ का ख़याल करें। यह क़ायदा हिन्दी मीडियम से अ़रबी सिखाने की सिर्फ़ एक कोशिश है।**

हिन्दी अक्षर	हिन्दी उच्चारण	अ़रबी अक्षर	हिन्दी अक्षर	हिन्दी उच्चारण	अ़रबी अक्षर
त़	त़ोय	ط	अ	अलिफ़	ا
ज़़	जोय	ظ	ब	बा	ب
अ़	अ़ैन	ع	त	ता	ت
ग़	ग़ैन	غ	ष़	ष़ा	ث
फ़	फ़ा	ف	ज	जीम	ج
क़	क़ाफ़	ق	ह़	ह़ा	ح
क	काफ़	ك	ख़	ख़ा	خ
ल	लाम्	ل	द	दाल	د
म	मीम्	م	ज़़	ज़ाल	ذ
न	नून	ن	र	रा	ر
व	वाव	و	ज़	ज़ा	ز
ह	हा	ه	स	सीन	س
अ	हम्ज़ा	ء	श	शीन	ش
य	या	ى	स़	स़ाद	ص
ह/त	हा/ता	ة ۃ	ज़़	ज़़ाद	ض
ऽ	छोटा मद	~	ऽऽ	बड़ा मद	~

सबक़ नं. : 6

हुरुफ़ की बदलती हुई शक्लें

01. अ़रबी में कुछ ह़र्फ़ ऐसे हैं, जो किसी दूसरे ह़र्फ़ में मिक्स नहीं होते।

02. कुछ ह़र्फ़ ऐसे हैं जिनकी मिक्स होने के बाद शक्ल बदल जाती है।

03. कुछ ह़र्फ़ ऐसे हैं जिनकी मिक्स होने के बाद भी शक्ल नहीं बदलती।

04. इस सबक़ में अ़रबी वर्णमाला के सभी ह़र्फ़ों को तर्तीबवार बदलती शक्लों के साथ दर्शाया गया है। स्टुडेण्ट इस सबक़ को भी अच्छी त़रह से ग़ौर करके पढ़ें।

ثـ ष़ा	ـث ष़ा	تـ ता	ـت ता	بـ बा	ـب बा	ا अलिफ़
ز ज़ा	ر रा	ذ ज़ाल	د दाल	خـ ख़ा	حـ हा	جـ जीम
عـ अ़ैन	ظ ज़ोय	ط त़ोय	ضـ ज़ाद	صـ स़ाद	شـ शीन	سـ सीन
ل लाम	ك काफ़	ق क़ाफ़	قـ क़ाफ़	فـ फ़ा	ـغـ ग़ैन	غـ ग़ैन
هـ हा	ـو वाव	ـنـ नून	نـ नून	ـمـ मीम	مـ मीम	م मीम
ـيـ या	يـ या	ى या	ء हम्ज़ा	ـه हा	ه हा	ـه हा

सबक़ नं. : 7

एक से ज़्यादा हुरुफ़ वाले लफ़्ज़

01. इस सबक़ में कुछ लफ़्ज़ दिखाए गये हैं, जिनमें दो या दो से ज़्यादा हर्फ़ हैं।

02. इन अल्फ़ाज़ के हर हर्फ़ को नीचे दिये गये सबक़ के मुताबिक़ अलग-अलग पढ़ने की प्रेक्टिस करें। आगे आने वाले अस्बाक़ (अध्यायों) में ज़ेर, ज़बर, पेश वग़ैरह की पहचान कराई जाएगी।

03. अरबी दाँये से बाँये और हिन्दी बाँये से दाँये पढ़ें।

شا शीन अलिफ़	كا काफ़ अलिफ़	قا क़ाफ़ अलिफ़	حا हा अलिफ़	عا अ़ैन अलिफ़	ها हा अलिफ़
زا ज़ा अलिफ़	نا नून अलिफ़	لا लाम अलिफ़	لا लाम अलिफ़	صا स़ाद अलिफ़	يا या अलिफ़
وا वाव अलिफ़	ما मीम अलिफ़	فا फ़ा अलिफ़	تا ता अलिफ़	دا दाल अलिफ़	طا त़ा अलिफ़
شى शीन या	كر काफ़ रा	قر क़ाफ़ रा	خو ख़ा वाव	عى अ़ैन या	هى हा या
تر ता रा	ثم स़ा मीम	يس या सीन	هد हा दाल	يت या ता	من मीम नून
قد क़ाफ़ दाल	به बा हा	قل क़ाफ़ लाम	كل काफ़ लाम	قو क़ाफ़ वाव	لم लाम मीम
رجس रा जीम सीन	بعد बा अ़ैन दाल	وقع वाव क़ाफ़ अ़ैन	نذر नून ज़ाल रा	هود हा वाव दाल	رسل रा सीन लाम

प्रेक्टिस

قوم	قال	رجل	خلت
بلغ	نفس	غيا	فيه
كان	غضب	كتب	ريب
كنتم	يغيظ	بسبب	بهيج
تعبد	راته	طرفك	عنده
اغنى	نموت	يقضى	افاك
اثيم	عذاب	تجرى	اظلم
اضحك	جرار	كاشفة	تعجبون
يخدعون	خلقتنى	يصلونها	قصرت

सबक़ नं. : 8

ज़बर ـَ

01. ज़बर की निशानी ऊपर दर्शाई गई है। यह हमेशा हर्फ़ के ऊपर लगता है। इसको पढ़ते वक़्त न तो हर्फ़ को लम्बा करना है और न झटका देना है और न मजहूल अदा करना है बल्कि लफ़्ज़ को नर्मी के साथ अदा करना है।

02. पुर पढ़े जाने वाले हर्फ़ों की अदायगी में होंठ गोल न होने पाएं।

03. जिस लफ़्ज़ पर ज़बर, ज़ेर, पेश या जज़म हो, वो अलिफ़ नहीं हम्ज़ा होता है, लिहाज़ा उसको हमेशा हम्ज़ा ही पढ़ें। अलिफ़ सिर्फ़ वो है जो हरकत या जज़म के बग़ैर हो और उससे पहले ज़बर हो।

04. ज़बर को इतना न खींचे कि अलिफ़ बन जाए। जैसे بَ से بَا न बने और न ही इतना जल्दी करें कि झटका पैदा हो, जैसे بَأْ (बअ्) बल्कि بَ ही रहे।

सबक़

حَ ह	جَ ज	ثَ ष़	تَ त	بَ ब	اَ अ
سَ स	زَ ज़	رَ र	ذَ ज़	دَ द	خَ ख़
عَ अ़	ظَ ज़	طَ त़	ضَ ज़	صَ स़	شَ श
مَ म	لَ ल	كَ क	قَ क़	فَ फ़	غَ ग़
یَ य	ءَ अ	ھَ ह	ہَ ह	وَ व	نَ न

05. जिन हुरूफ़ की आवाज़ में मा'मूली फ़र्क़ है, उनकी आवाज़ में पाए जाने वाले फ़र्क़ की प्रेक्टिस कीजिये। जैसे ت ط ث س ص ق ك ذ ز ض ظ

06. अगर ر पर ज़बर हो तो ر पुर होगी, लिहाज़ा उसे पुर ही पढ़ा जाए।

07. **हिज्जे (उच्चारण) का तरीक़ा :** جَعَلَ जीम ज़बर ज, ऐन ज़बर अ, लाम ज़बर ल = ज-अ-ल। अगर आख़री हर्फ़ पर वक़्फ़: करना हो तो लाम साकिन पढ़ा जाएगा, इस तरह : جَعَلْ जअल्।

08. नीचे दिये गये सबक़ में कुछ लफ़्ज़ों के उच्चारण लिखे गये हैं और कुछ प्रेक्टिस के लिये छोड़े गये हैं, उनको आप ख़ुद से लिखें।

सबक़

جَمَعَ जमअ	وَرَدَ वरद	صَدَقَ सदक़	كَتَبَ कतब	فَرَضَ फ़रज़
قَتَلَ क़तल	وَلَدَ वलद	وَجَدَ वजद	جَعَلَ जअल	اَحَدَ अहद
كَسَبَ कसब	ضَرَبَ ज़रब	حَسَدَ हसद	شَرَحَ शरह	خَتَمَ ख़तम

प्रेक्टिस

ظَلَمَ	بَلَغَ	مَكَثَ	حَشَرَ	فَعَلَ ....
عَدَلَ	خَلَقَ	مَرَجَ	زَعَمَ	رَفَعَ ....
عَبَسَ	اَمَرَ	فَسَقَ	عَبَدَ	عَشَرَ ....

सबक़ नं. : 9

दो ज़बर या तन्वीन ً

01. ज़बर के बाद दो ज़बर का सबक़ लाया गया है ताकि ज़बर और दो ज़बर का फ़र्क़ अच्छी तरह वाज़ेह (स्पष्ट) हो जाए।

02. दो ज़बर, दो ज़ेर और दो पेश को तन्वीन कहते हैं। तन्वीन के हुर्फ़ों पर कभी ग़ुन्ना किया जाता है।

03. नाक में आवाज़ ले जाने को ग़ुन्ना कहते हैं और ग़ुन्ना एक अलिफ़ के बराबर किया जाता है।

04. हर्फ़े-तन्वीन के साथ जो अलिफ़ लिखा होता है, वो पढ़ा नहीं जाएगा; जैसे بًا को بَنْ बन् और تًا को تَنْ तन् पढ़ा जाएगा।

सबक़

حًا हन्	جًا जन्	ثًا स़न्	تًا तन्	بًا बन्	اً अन्
سًا सन्	زًا ज़न्	رًا रन्	ذًا ज़न्	دًا दन्	خًا ख़न्
عًا अ़न्	ظًا ज़न्	طًا त़न्	ضًا ज़न्	صًا स़न्	شًا शन्
لًا लन्	لًا लन्	كًا कन्	قًا क़न्	فًا फ़न्	غًا ग़न्
يًا यन्	أً अन्	هًا हन्	وًا वन्	نًا नन्	مًا मन्

सबक़

اَسَفًا असफ़न्	بَلَدًا बलदन्	سَلَمًا सलमन्	بَشَرًا बशरन्	عَمَلًا अ़मलन्
طَبَقًا त़बक़न्	حَسَنًا हसनन्	ثَمَنًا स़मनन्	عَرَضًا अ़रज़न्	حَرَمًا हरमन्
عَجَبًا अ़जबन्	بَطَرًا बत़रन्	اَبَدًا अबदन्	سَفَهًا सफ़हन्	قَصَصًا क़सस़न्

प्रेक्टिस

مَثَلًا	رَغَدًا	مَرَضًا	وَسَطًا	اَحَدًا ....
رَشَدًا	وَطَرًا	مَلَكًا	عَدَدًا	جَنَفًا ....
اَذًى	مَرَحًا	وَلَدًا	اَجَلًا	حَرَجًا ....

05. हिज्जे और तन्वीन की ख़ूब अच्छी त़रह प्रेक्टिस कीजिये। मोटे पढ़े जाने वाले हुरूफ़ को ख़ूब मोटा पढ़िये; जैसे خ ص ض ط غ ق

06. जब रा ر पर ज़बर हो या दो ज़बर हों तो उसे मोटा पढ़ें।

07. दो ज़बर वाले लफ़्ज़ पर वक़्फ़ः करने की सूरत में उसे अलिफ़ से बदल दिया जाता है। जैसे سَلَمًا सलमन् पर वक़्फ़ः (ठहराव) करने की सूरत में उसे سَلَمَا सलमा पढ़ा जाएगा। इसी त़रह جَنَفًا जनफ़न् को جَنَفَا जनफ़ा और عَمَلًا अ़मलन को عَمَلَا अ़मला पढ़ा जाएगा।

सबक़ नं. : 10

खड़ा ज़बर ٰ

01. ह़रकात (उच्चारण) की दो ह़ालतें (परिस्थितियाँ) हैं। एक, पड़ी या सीधी ह़ालत; दूसरी खड़ी या उल्टी ह़ालत। लिहाज़ा ज़बर की भी दो ह़ालतें हैं; एक पड़ा ज़बर َ, दूसरा खड़ा ज़बर ٰ

02. खड़े ज़बर को एक अलिफ़ के बराबर खींचना चाहिये क्योंकि खड़ा ज़बर ह़र्फ़े मद्द के अलिफ़ के समान होता है।

03. नून और मीम को अदा करते वक़्त नाक से आवाज़, ज़रूरत से ज़्यादा नहीं निकलनी चाहिये।

सबक़

حٰ ह़ा	جٰ जा	ثٰ ष़ा	تٰ ता	بٰ बा	اٰ आ
سٰ सा	زٰ ज़ा	رٰ रा	ذٰ ज़ा	دٰ दा	خٰ ख़ा
عٰ अ़ा	ظٰ ज़ा	طٰ त़ा	ضٰ ज़ा	صٰ स़ा	شٰ शा
مٰ मा	لٰ ला	كٰ का	قٰ क़ा	فٰ फ़ा	غٰ ग़ा
ىٰ या	ءٰ आ	هٰ हा	ہٰ हा	وٰ वा	نٰ ना

हिज्जे का त़रीक़ा : مُوْسٰى मूसा के हिज्जे इस त़रह होंगे; मीम पेश वाव साकिन مُوْ मू, सीन खड़ा ज़बर سٰى सा। इसी त़रह عِيْسٰى अ़ीसा वग़ैरह के हिज्जे होंगे।

प्रेक्टिस

يَخْشٰى यख़्शा	سَجٰى सजा	قَلٰى क़ला	عَلٰى अ़ला	غَوٰى ग़वा
عَصٰى अ़सा	عَسٰى अ़सा	طَغٰى तग़ा	يَحْيٰى यह्या	اَحْوٰى अह्वा
رَمٰى रमा	رَاٰى रआ	يَرٰى यरा	اِسْحٰقَ इस्हाक़	الٓفٍ आलाफ़िन्
اٰخَرَ	اٰدَمَ	اٰثَرَ	اٰزَرَ	اٰيٰتٌ ....
اِبْرٰهِيْمَ	مُوْسٰى	بِاٰيَةٍ	يَخْفٰى	اِلٰى ....
اٰتٰى	يَرْضٰى	اَدْنٰى	عِيْسٰى	هٰرُوْنَ ....

04. जिस ह़र्फ़ के आख़िर में खड़ा ज़बर हो तो वक़्फ़: करने पर भी उसका तलफ़्फ़ुज़ (उच्चारण) वही रहेगा। जैसे عِيْسٰى अ़ीसा का उच्चारण वक़्फ़: करने पर عِيْسٰى अ़ीसा, غَوٰى ग़वा का वक़्फ़: غَوٰى ग़वा, رَاٰى रआ का वक़्फ़: رَاٰى रआ ही होगा।

05. कुछ लोग **खड़े ज़बर** पर वक़्फ़: करते वक़्त तीन या चार अलिफ़ की मद्द करते हैं, ये बिल्कुल ग़लत़ है। वक़्फ़: में भी खड़े ज़बर को एक अलिफ़ के बराबर खींचकर ही पढ़ा जाएगा।

सबक़ नं. : 11

ज़ेर ـِ

01. ज़ेर की निशानी ऊपर दर्शाई गई है। यह हमेशा ह़र्फ़ के नीचे लगता है।

02. ज़ेर को हमेशा मा'रूफ़ पढ़ें और मजहूल न पढ़ें।

03. ज़ेर का तलफ़्फ़ुस (उच्चारण) 'इ' के अनुसार होता है। ज़ेर को इतना न खींचे कि 'ई' बन जाए। जैसे اِ को इ पढ़ा जाए اِیْ ई पढ़ना ग़लत़ होगा। इतना जल्दी उच्चारण न करें कि झटका पैदा हो, जैसे اِءْ (इअ्) बल्कि उच्चारण अलिफ़ ज़ेर इ ही रहे।

04. ज़ेर का तलफ़्फ़ुस 'इ' होता है, 'ए' पढ़ना ग़लत़ होगा। 'इह्दिनस़्स़िरातल् मुस्तक़ीम' को 'एह्दिनस़्स़िरातल् मुस्तक़ीम' पढ़ना ग़लत़ होगा।

05. उच्चारण करते वक़्त ज़बर और ज़ेर के उच्चारण का ख़ास़ ख़याल रखें।

सबक़

حِ हि	جِ जि	ثِ ष़ि	تِ ति	بِ बि	اِ इ
سِ सि	زِ ज़ि	رِ रि	ذِ ज़ि	دِ दि	خِ ख़ि
عِ ऽि	ظِ ज़ि	طِ त़ि	ضِ ज़ि	صِ स़ि	شِ शि
مِ मि	لِ लि	كِ कि	قِ क़ि	فِ फ़ि	غِ ग़ि
یِ यि	ءِ इ	ھِ हि	هِ हि	وِ वि	نِ नि

सबक़

غَضِبَ ग़ज़िब	فَهِيَ फ़हिय	حَفِظَ हफ़िज़	خَشِيَ ख़शिय	حَبِطَ हबित़
عَمِلَ अ़मिल	حَسِبَ हसिब	عَلِمَ अ़लिम	عَهِدَ अ़हिद	سَفِهَ सफ़िह
سَخِرَ सख़िर	اَذِنَ अज़िन	شَرِبَ शरिब	اِرَمَ इरम	يَئِسَ यइस

प्रेक्टिस

يَلِجَ	صَعِقَ	خَسِرَ	لَبِثَ	فَلَقَ
....	....	....	....	....
رَضِيَ	شَهِدَ	بَرِقَ	قَمِرَ	كَرِهَ
....	....	....	....	....
نَسِيَ	لَعِبَ	وَلِدِ	طَفِقَ	رَحِمَ
....	....	....	....	....

05. عَهِدَ में ع अ़ैन और ه हा की आवाज़ें अलग-अलग महसूस होनी चाहिये।

06. صَعِقَ स़अ़िक़ में ص स़ाद की आवाज़ मोटी और سَخِرَ सख़िर में س सीन की आवाज़ बारीक हो।

07. वक़्फ़ः करने की सूरत में जिस लफ़्ज़ के आख़िर में ज़ेर हो उसे साकिन किया जाएगा। जैसे اِبِلِ इबिलि पर वक़्फ़ः करते वक़्त اِبِلْ इबिल् और قَمَرِ क़मरि पर वक़्फ़ः करते वक़्त قَمَرْ क़मर् पढ़ा जाएगा।

सबक़ नं. : 12

दो ज़ेर ٍ

01. ज़ेर के बाद दो ज़ेर का सबक़ लाया गया है ताकि ज़ेर और दो ज़ेर का फ़र्क़ अच्छी त़रह़ वाज़ेह (स्पष्ट) हो जाए।

02. दो ज़बर, दो ज़ेर और दो पेश को तन्वीन कहते हैं। तन्वीन के ह़र्फ़ों पर कभी गुन्ना किया जाता है।

03. नाक में आवाज़ ले जाने को गुन्ना कहते हैं और गुन्ना एक अलिफ़ के बराबर किया जाता है।

04. यहाँ भी ह़र्फ़ की अस़्ल आवाज़ का ख़याल रखा जाएगा। بٍ बा दो ज़ेर بِنْ बिन् पढ़ा जाए, بِيْنْ बीन पढ़ना ग़लत होगा।

सबक़

حٍ ह़िन्	جٍ जिन्	ثٍ स़िन्	تٍ तिन्	بٍ बिन्	اٍ इन्
سٍ सिन्	زٍ ज़िन्	رٍ रिन्	ذٍ ज़िन्	دٍ दिन्	خٍ ख़िन्
عٍ अ़िन्	ظٍ ज़िन्	طٍ त़िन्	ضٍ ज़िन्	صٍ स़िन्	شٍ शिन्
مٍ मिन्	لٍ लिन्	كٍ किन्	قٍ क़िन्	فٍ फ़िन्	غٍ ग़िन्
يٍ यिन्	ءٍ इन्	هٍ हिन्	ةٍ हिन्	وٍ विन्	نٍ निन्

सबक़

كَبَدٍ कबदिन्	نَفَقَةٍ नफ़क़तिन्	كَذِبٍ कज़िबिन्	بِقَبَسٍ बिक़बसिन्	بِدَمٍ बिदमिन्
عَمَدٍ अ़मदिन्	خَبَرٍ ख़बरिन्	رَقَبَةٍ रक़बतिन्	لَبَنٍ लबनिन्	عَلَقٍ अ़लक़िन्
مَسَدٍ मसदिन्	ثَمَنٍ षमनिन्	أَجَلٍ अजलिन्	بِيَدٍ बियदिन्	عِنَبٍ अ़िनबिन्

प्रेक्टिस

حَسَنٍ	غَضَبٍ	عَمَلٍ	سَخَطٍ	لَهَبٍ
....	....	....	....	....
قَدَرٍ	مَثَلٍ	بَشَرٍ	سَفَرَةٍ	فِئَةٍ
....	....	....	....	....
مَلَكٍ	ذَكَرٍ	شَجَرٍ	لِغَدٍ	سَعَةٍ
....	....	....	....	....

05. سَخَطٍ सख़तिन् के س सीन की अदायगी में सीटी जैसी आवाज़ निकले और خ ख़ा और ط त़ा को मोटा पढ़ा जाए।

06. بَشَرٍ बशरिन् में ر रा वस्ल की सूरत में बारीक होगी जबकि वक़्फ़ः की सूरत में पुर पढ़ी जाएगी। ऐसे ही شَجَرٍ शजरिन् वग़ैरह हैं।

07. जिस लफ़्ज़ के आख़िर में दो ज़ेर हों उसे वक़्फ़ः की सूरत में साकिन करें जैसे بِدَمٍ बिदमिन् को بِدَمْ बिदम् पढ़ा जाए।

08. जिन अल्फ़ाज़ के आख़िर में ة गोल ता हो जैसे سَفَرَةٍ सफ़रतिन् उसे वक़्फ़ः की सूरत में ة गोल ता को ه हा से बदलकर पढ़ा जाएगा। जैसे سَفَرَةٍ सफ़रतिन् से سَفَرَهْ सफ़रह, نَفَقَةٍ नफ़क़तिन् को نَفَقَهْ नफ़क़ह।

सबक़ नं. : 13

खड़ी ज़ेर ـٖ

01. ज़बर की तरह ज़ेर की भी दो हालतें हैं; एक पड़ी ज़ेर ـِ, दूसरी खड़ी ज़ेर ـٖ

02. खड़ी ज़ेर को एक अलिफ़ के बराबर खींचना चाहिये क्योंकि खड़ी ज़ेर हर्फ़े मद्द के ی या के समान होती है।

सबक़

ح ही	ج जी	ث सी	ت ती	ب बी	ا ई
س सी	ز ज़ी	ر री	ذ ज़ी	د दी	خ ख़ी
ع अ़ी	ظ ज़ी	ط त़ी	ض ज़ी	ص स़ी	ش शी
م मी	ل ली	ك की	ق क़ी	ف फ़ी	غ ग़ी
ی यी	ء ई	ھ ही	ہ ही	و वी	ن नी

हिज्जे का त़रीक़ा : بِعَبْدِهٖ बिअ़ब्दिही के हिज्जे इस त़रह होंगे; बा ज़ेर, अ़ैन ज़बर, बा साकिन, दाल ज़ेर بِعَبْدِ बिअ़ब्दि, हा खड़ी ज़ेर هٖ ही, बिअ़ब्दिही इसी त़रह نَسْتَحْيٖ नस्तह़्यी, بِعَمَلِهٖ बिअ़मलिही, اَهْلِهٖ अह्लिही वग़ैरह के हिज्जे होंगे।

प्रेक्टिस

رُسُلِهٖ रुसुलिही	بَعْدِهٖ बअ़्दिही	قَبْلِهٖ क़ब्लिही	فِيْهِ फ़ीही	بِهٖ बिही
نَسْتَحْيِيْ नस्तह्यी	وَجْهِهٖ वज्हिही	بَطْنِهٖ बत्निही	بِعَبْدِهٖ बिअ़ब्दिही	عَمَلِهٖ अ़मलिही
اِلٰفِهِمْ ईलाफ़िहिम्	هٰذِهٖ हाज़िही	بِوَلَدِهٖ बिवलदिही	بِعَمَلِهٖ बिअ़मलिही	بِيَدِهٖ बियदिही
بَرْقِهٖ	بِمُزَحْزِحِهٖ	لِقَوْمِهٖ	اَهْلِهٖ	اٰيٰتِهٖ ....
ثَمَرِهٖ	خِلٰلِهٖ	تُرْزَقَانِهٖ	يَسْتَحْيِيْ	كُتُبِهٖ ....
قَلْبِهٖ	تُقٰتِهٖ	اُحْيِيْ	يُحْيِيْ	قِيْلِهٖ ....

03. अगर ه हा के नीचे खड़ी ज़ेर हो तो वक़्फ़: की सूरत में साकिन करके पढ़ा जाएगा। जैसे بِهٖ बिही का वक़्फ़: بِهْ बिह और فِيْهِ फ़ीही वक़्फ़: की सूरत में فِيْهْ फ़ीह होगी। या'नी वक़्फ़: की हालत में पड़ी ज़ेर और खड़ी ज़ेर का फ़र्क़ ख़त्म हो जाएगा।

04. نَسْتَحْيِيْ नस्तह्यी, يَسْتَحْيِيْ यस्तह्यी, يُحْيِيْ युह्यी, اُحْيِيْ उह्यी वग़ैरह में खड़ी ज़ेर को एक अलिफ़ के बराबर खींचकर वक़्फ़: अदा करेंगे। या'नी जिस लफ़्ज़ के आख़िर में या हो तो वक़्फ़: की सूरत में भी खड़ी ज़ेर के अनुरूप ही पढ़ा जाएगा।

सबक़ नं. : 14

पेश ـُ

01. पेश की निशानी ऊपर दर्शाई गई है। यह हमेशा हर्फ़ के ऊपर लगता है।

02. पेश को हमेशा मा'रूफ़ पढ़ें और मजहूल न पढ़ें।

03. पेश का तलफ़्फ़ुज़ (उच्चारण) 'उ' के अनुसार होता है। पेश को इतना न खींचे कि 'ऊ' बन जाए। जैसे अलिफ़ पेश اُ को 'उ' पढ़ा जाए اُوْ ऊ पढ़ना ग़लत होगा। इतना जल्दी उच्चारण न करें कि झटका पैदा हो, जैसे اُءْ (उअ) बल्कि उच्चारण अलिफ़ पेश उ ही रहे।

04. जिस रा पर पेश हो, वो रा पुर पढ़ी जाएगी जैसे رُسُلُ रुसुलु लेकिन रु को इतना न खींचे कि रू की आवाज़ के साथ होंठ गोल हो जाए।

सबक़

حُ	جُ	ثُ	تُ	بُ	اُ
हु	जु	षु	तु	बु	उ
سُ	زُ	رُ	ذُ	دُ	خُ
सु	ज़ु	रु	ज़ु	दु	ख़ु
عُ	ظُ	طُ	ضُ	صُ	شُ
अु	ज़ु	तु	ज़ु	सु	शु
مُ	لُ	كُ	قُ	فُ	غُ
मु	लु	कु	क़ु	फु	ग़ु
یُ	ءُ	هُ	ہُ	وُ	نُ
यु	उ	हु	हु	वु	नु

सबक़

رُسُلُ रुसुलु	رُبُعُ रुबुअु	حُبُكِ हुबुकि	صُحُفِ सुहुफ़ि	يَهَبُ यहबु
وُجِدَ वुजिद	مُنِعَ मुनिअ	خَبُثِ ख़बुषि	اَعِظُ अअ़िज़ु	تَزِرُ तज़िरु
اُفُقِ उफ़ुक़ि	فُعِلَ फुअ़िल	قُتِلَ क़ुतिल	حَسُنَ हसुन	لُعِنَ लुअ़िन

प्रेक्टिस

كَلِمَةُ	نُفِخَ	دُعِيَ	ذُكِرَ	سُقِطَ
حُشِرَ	وَهُوَ	سُئِلَ	قُرِئَ	اُخَرُ
قُدِرَ	قُضِيَ	كُتِبَ	يَعِدُ	نُذُرُ

05. ذُكِرَ ज़ुकिर, حُشِرَ हुशिर, قُدِرَ क़ुदिर, تَزِرُ तज़िरु वग़ैरह में रा वक़्फ़: की सूरत में बारीक और वस्ल की सूरत में पुर होगी।

06. نُذُرُ नुज़ुरु में रा वस्ल की सूरत में बारीक पढ़ी जाएगी लेकिन वक़्फ़: की सूरत में रा पुर पढ़ी जाएगी।

07. जिस लफ़्ज़ के आख़िर पर पेश हो तो वक़्फ़: की सूरत में उसे साकिन करके पढ़ा जाएगा। जैसे رُسُلُ रुसुलु पर वक़्फ़: رُسُلْ रुसुल् होगा।

सबक़ नं. : 15

दो पेश ٌ

01. पेश के बाद दो पेश ٌ का सबक़ लाया गया है ताकि पेश और दो पेश का फ़र्क़ अच्छी तरह वाज़ेह (स्पष्ट) हो जाए।

02. दो ज़बर, दो ज़ेर और दो पेश को तन्वीन कहते हैं। तन्वीन के हुरूफ़ों पर कभी गुन्ना किया जाता है।

03. जिस ر रा पर एक पेश हो उसे पुर पढ़ा जाता है, उसी तरह दो पेश वाली रा भी पुर होगी। दो पेश की तन्वीन अदा करते वक़्त हर्फ़ की अस्ल आवाज़ का ख़याल रखा जाएगा जैसे بٌ बा दो पेश बुन् بُنْ होगा उसे بُوْن बून पढ़ना ग़लत होगा।

05. जो हुरुफ़ पुर (मोटे) पढ़े जाने चाहिये उनको पुर और जो बारीक पढ़े जाने वाले हैं, उनको बारीक पढ़ा जाए।

सबक़

حٌ हुन्	جٌ जुन्	ثٌ षुन्	تٌ तुन्	بٌ बुन्	اٌ उन्
سٌ सुन्	زٌ ज़ुन्	رٌ रुन्	ذٌ ज़ुन्	دٌ दुन्	خٌ ख़ुन्
عٌ अुन्	ظٌ ज़ुन्	طٌ तुन्	ضٌ ज़ुन्	صٌ सुन्	شٌ शुन्
مٌ मुन्	لٌ लुन्	كٌ कुन्	قٌ क़ुन्	فٌ फ़ुन्	غٌ ग़ुन्
یٌ युन्	ءٌ उन्	ھٌ हुन्	ةٌ हुन्	وٌ वुन्	نٌ नुन्

सबक़

حُمُرٌ	قِطَعٌ	سُرُرٌ	اَحَدٌ	بَقَرَةٌ
हुमुरुन्	क़ितअुन्	सुरुरुन्	अहदुन्	बक़रतुन्
ظُلَلٌ	كُتُبٌ	غَبَرَةٌ	عَمَلٌ	خُشُبٌ
ज़ुललुन्	कुतुबुन्	ग़बरतुन्	अ़मलुन्	ख़ुशुबुन्
نَصَبٌ	ظَمَأٌ	قَتَرَةٌ	حَسَنَةٌ	خُلُقٌ
नसबुन्	जमउन्	क़तरतुन्	हसनतुन्	ख़ुलुक़ुन्

प्रेक्टिस

مَرَضٌ	مَلَكٌ	قَدَمٌ	زَبَدٌ	كَلِمَةٌ
....	....	....	....	....
دِيَةٌ	حَرَجٌ	رَجُلٌ	قَسَمٌ	بَشَرٌ
....	....	....	....	....
جُدَدٌ	رُسُلٌ	لَعِبٌ	اُذُنٌ	اَشِرٌ
....	....	....	....	....

06. कुछ अल्फ़ाज़ में कुछ हर्फ़ मोटे और कुछ बारीक पढ़े जाते हैं। मिसाल के तौर पर ظُلَلٌ ज़ुललुन् में ظ ज़ा पुर और ل लाम् बारीक है। कहीं ऐसा न हो कि ज़ा को पुर करते वक़्त लाम भी पुर हो जाए और न ऐसा हो कि लाम की वजह से ज़ा भी बारीक हो जाए। इसी तरह خُشُبٌ ख़ुशुबुन्, بَقَرَةٌ बक़रतुन्, سُرُرٌ सुरुरुन् वग़ैरह में भी एहतियात रखा जाए।

07. जिस लफ़्ज़ पर वक़्फ़ः करें, अगर उसके आख़िर में गोल ता ة हो तो उसे हा ه साकिनः से बदलें। जैसे बक़रतुन् से बक़रह, कलिमतुन् से कलिमह और जिस लफ़्ज़ के आख़िर में कोई और हर्फ़ हो, जिस पर दो पेश हों तो उस पर वक़्फ़ः ऐसे करेंगे, مَلَكٌ मलकुन् से مَلَكْ मलक्, قَدَمٌ क़दमुन् से قَدَمْ क़दम्

सबक़ नं. : 16

उल्टा पेश ٗ

01. ज़बर और ज़ेर की त़रह़ पेश की भी दो ह़ालतें होती हैं; सीधा पेश ُ और उल्टा पेश ٗ

02. उल्टा पेश को वाव मद्द: की त़रह़ खींचकर पढ़ें क्योंकि उल्टा पेश و वाव के समान होता है; या'नी उल्टा पेश ऊ का उच्चारण पैदा करता है।

सबक़

خٗ ह़ू	جٗ जू	ثٗ ष़ू	تٗ तू	بٗ बू	اٗ ऊ
سٗ सू	زٗ ज़ू	رٗ रू	ذٗ ज़ू	دٗ दू	خٗ ख़ू
عٗ अ़ू	ظٗ ज़ू	طٗ त़ू	ضٗ ज़ू	صٗ स़ू	شٗ शू
مٗ मू	لٗ लू	كٗ कू	قٗ क़ू	فٗ फ़ू	غٗ ग़ू
یٗ यू	ءٗ ऊ	ھٗ हू	ہٗ हू	وٗ वू	نٗ नू

हिज्जे का त़रीक़ा : عِبَادَہٗ ड़िबादहू के हिज्जे इस त़रह़ होंगे; अ़ैन ज़ेर عِ अ़ि, बा ज़बर अलिफ़ بَا बा, अ़िबा दाल ज़बर دَ दा, हा उल्टा पेश ہٗ हू, अ़िबादहू। इसी त़रह़ दूसरे अल्फ़ाज़ के भी हिज्जे होंगे।

प्रेक्टिस

عَمَلُهٗ अ़मलुहू	اَمْرُهٗ अम्रुहू	قَوْمُهٗ क़ौमुहू	فِصٰلُهٗ फ़िसालुहू	عِبَادَهٗ ज़िबादहू
مَعَهٗ मअ़हू	لَهٗ लहू	عَذَابَهٗ अ़ज़ाबहू	كِتٰبَهٗ किताबहू	خِتٰمُهٗ ख़ितामुहू
رِزْقُهٗ रिज़्क़ुहू	اَمَاتَهٗ अमातहू	خَلَقَهٗ ख़लक़हू	اَكْفَرَهٗ अक्फ़रहू	يَرَهٗ यरहू
وَرِىَ	مَوَدَّةً	رَسُوْلَهٗ	يَلْوٗنَ	يَسْتَوٗنَ ....
وَرِثَهٗ	صَدْرَهٗ	دَاوٗدُ	وَثَاقَهٗ	فَلَهٗ ....
اَنْشَرَهٗ	قَبْضَتُهٗ	سُبْحٰنَهٗ	نِعَمَهٗ	اَطْعَمَهٗ ....

03. खड़ी ज़ेर की तरह उल्टा पेश भी वक़्फ़: में ख़त्म हो जाएगा। जैसे عِبَادَهٗ ज़िबादहू पर वक़्फ़: عِبَادَهْ ज़िबादह की शक्ल में होगा। इसी तरह قَوْمُهٗ क़ौमुहू पर वक़्फ़: قَوْمُهْ क़ौमह और يَرَهٗ यरहू का वक़्फ़: يَرَهْ यरह की शक्ल में होगा।

सबक़ नं. : 17

जज़म या सुकून –

01. जज़म का निशान ऊपर दर्शाया गया है। जज़म हर्फ़ के ऊपर लगता है और इसकी अपनी कोई आवाज़ नहीं होती।

02. जिस हर्फ़ के ऊपर जज़म हो उसे साकिन कहते हैं। जज़म वाला हर्फ़ अपने से पहले वाले हर्फ़ से मिलाकर पढ़ा जाता है।

03. जज़म की सूरत में क़ाफ़, त़ा, बा, जीम, दाल को हिलाया जाए, इसे 'क़लक़ला' कहते हैं।

اُتْ उत्	اِتْ इत्	اَتْ अत्	اُبْ उब्	اِبْ इब्	اَبْ अब्
اُجْ उज्	اِجْ इज्	اَجْ अज्	اُثْ उष्	اِثْ इष्	اَثْ अष्
اُخْ उख़्	اِخْ इख़्	اَخْ अख़्	اُحْ उह्	اِحْ इह्	اَحْ अह्
اُذْ उज़्	اِذْ इज़्	اَذْ अज़्	اُدْ उद्	اِدْ इद्	اَدْ अद्
اُزْ उज़्	اِزْ इज़्	اَزْ अज़्	اُرْ उर्	اِرْ इर्	اَرْ अर्
اُشْ उश्	اِشْ इश्	اَشْ अश्	اُسْ उस्	اِسْ इस्	اَسْ अस्
اُضْ उज़्	اِضْ इज़्	اَضْ अज़्	اُصْ उस़्	اِصْ इस़्	اَصْ अस़्

اُظْ उज़्	اِظْ इज़्	اَظْ अज़्	اُطْ उत्	اِطْ इत्	اَطْ अत्
اُغْ उग़्	اِغْ इग़्	اَغْ अग़्	اُعْ उअ़्	اِعْ इअ़्	اَعْ अअ़्
اُقْ उक़्	اِقْ इक़्	اَقْ अक़्	اُفْ उफ़्	اِفْ इफ़्	اَفْ अफ़्
اُلْ उल्	اِلْ इल्	اَلْ अल्	اُكْ उक्	اِكْ इक्	اَكْ अक्
اُنْ उन्	اِنْ इन्	اَنْ अन्	اُمْ उम्	اِمْ इम्	اَمْ अम्
اُهْ उह्	اِهْ इह्	اَهْ अह्	اُوْ ऊ	اِوْ इव्	اَوْ औ
اُىْ उय्	اِىْ ई	اَىْ ऐ	اُءْ उअ्	اِءْ इअ्	اَءْ अअ्

04. इन पाँच हुरुफ़ के अ़लावा बाक़ी हुरुफ़ की अदायगी में एह़तियात़ से काम लिया जाए और ह़र्फ़े-क़लक़ला की आवाज़ के बारे में अ़ालिम से जानकारी ली जाए।

06. लफ़्ज़ زَوْجًا ज़ौजन् का तलफ़्फ़ुज़ (उच्चारण) इस त़रह़ होगा। ज़ा जबर वाव जज़म زَوْ ज़ौ, जीम दो जबर جًا जन् = زَوْجًا ज़ौजन। इसी त़रह फ़ित्नतन् का उच्चारण यूँ होगा, फ़ा ज़ेर ता जज़म فِتْ फ़ित्, नून जबर نَ न, गोल ता दो पेश ةٌ तन् = فِتْنَةٌ फ़ित्नतन। वक़्फ़: की सूरत में इसे فِتْنَهْ फ़ित्न: पढ़ा जाएगा।

07. कुछ लोग साकिन ह़र्फ़ को पढ़ते वक़्त हिला देते हैं। ऐसा करना ग़लत़ है बल्कि साकिन को पूरी मज़बूती और जमाव के साथ अदा किया जाए।

सबक़

وَالْعَصْرِ वल्अस्रि	وَانْحَرْ वन्हर	اَرْسَلَ अर्सल	اُقْتُلْ उक़्तुल्
تَعْلَمُ तअ्लमु	شَاْنٍ शअ्निन्	لُؤْلُؤًا लुअ्लुन्	كَعَصْفٍ कअ़स्फ़िन्
شِئْتُمْ शिअ्तुम्	اِقْرَاْ इक़्र:	يَدْرَؤُكُمْ यद्रउकुम्	كَاْسًا कअ्सन्
بَغْيًا बग़्यन्	اُشْهُدُ उश्हिदु	نُصِبَتْ नुसिबत्	لَمْ يَلِدْ लम् यलिद्

प्रेक्टिस

اَجْرَهُمْ	يَجْعَلُ	تَذْهَلُ	فِتْنَةً
اَلْحَمْدُ	اَسْتَغْفِرُ	اَتْمَمْتُ	اَشْفَقْنَ
عَسْعَسَ	يَمْسَسْكَ	خُلِقَتْ	اِضْرِبْ
مُؤْمِنٌ	مُسْرِفٌ	فِي الْاَرْضِ	قُلْتُمْ

08. जिस लफ़्ज़ के आख़िरी हर्फ़ पर जज़म हो तो वक़्फ़: की सूरत में भी वो उसी तरह पढ़ा जाएगा। जैसे مَاهِيَهْ माहियः को مَاهِيَهْ माहियः ही पढ़ा जाएगा। जिस लफ़्ज़ के आख़िर में हर्फ़े-क़लक़ला मुतहर्रिक हो, उसे वक़्फ़: की सूरत में साकिन करके अच्छी तरह क़लक़ला के साथ अदा करेंगे। जैसे لَكَنُوْدٌ लकनूदुन् को لَكَنُوْدْ लकनूद पढ़ेंगे।

सबक़ नं. : 18

हुरूफ़े मद्दः

01. अलिफ़ साकिन बे झटके से पहले अगर ज़बर हो तो उसे **अलिफ़ मद्दः** कहते हैं। जैसे بَا बा, تَا ता, ثَا ष़ा वग़ैरह।

02. वाव साकिन से पहले अगर पेश हो तो उसे **वाव मद्दः** कहते हैं। जैसे بُوْ बू, تُوْ तू, جُوْ जू वग़ैरह।

03. या साकिन से पहले अगर ज़ेर हो तो उसे **या मद्दः** कहते हैं। जैसे دِیْ दी, رِیْ री, اِیْ ई वग़ैरह।

04. ये तीनों हुरूफ़, **हुरूफ़े-मद्दः** कहलाते हैं। इनको एक अलिफ़ के बराबर खींचकर पढ़ा जाता है। इससे कम या ज़्यादा खींचना ग़लत है।

تِیْ ती	تُوْ तू	تَا ता	بِیْ बी	بُوْ बू	بَا बा
جِیْ जी	جُوْ जू	جَا जा	ثِیْ ष़ी	ثُوْ ष़ू	ثَا ष़ा
خِیْ ख़ी	خُوْ ख़ू	خَا ख़ा	حِیْ ही	حُوْ हू	حَا हा
ذِیْ ज़ी	ذُوْ ज़ू	ذَا ज़ा	دِیْ दी	دُوْ दू	دَا दा
زِیْ ज़ी	زُوْ ज़ू	زَا ज़ा	رِیْ री	رُوْ रू	رَا रा
شِیْ शी	شُوْ शू	شَا शा	سِیْ सी	سُوْ सू	سَا सा

ضِيْ ज़ी	ضُوْ ज़ू	ضَا ज़ा	صِيْ स़ी	صُوْ स़ू	صَا स़ा
ظِيْ ज़ी	ظُوْ ज़ू	ظَا ज़ा	طِيْ त़ी	طُوْ त़ू	طَا त़ा
غِيْ ग़ी	غُوْ ग़ू	غَا ग़ा	عِيْ अ़ी	عُوْ अ़ू	عَا अ़ा
قِيْ क़ी	قُوْ क़ू	قَا क़ा	فِيْ फ़ी	فُوْ फ़ू	فَا फ़ा
لِيْ ली	لُوْ लू	لَا ला	كِيْ की	كُوْ कू	كَا का
نِيْ नी	نُوْ नू	نَا ना	مِيْ मी	مُوْ मू	مَا मा
هِيْ ही	هُوْ हू	هَا हा	وِيْ वी	وُوْ वू	وَا वा
يِيْ यी	يُوْ यू	يَا या	ءِيْ ई	ءُوْ ऊ	ءَا आ

05. हुरूफ़े-मद्दः के मख़ारिज का लिहाज़ करते हुए पढ़ें और उनको मजहूल पढ़ने से बचें।

06. स़िर्फ़ हुरूफ़े-मद्दः को लम्बा किया जाए। कुछ लोग हुरूफ़े-मद्दः को लम्बा करने के साथ-साथ पहले वाले हुरूफ़ को भी लम्बा कर देते हैं, इससे भी बचा जाए।

सबक़

سَاهُوْنَ सा-हू-न	قَالُوْا क़ा-लू	عَاقَبَ आ-क़ब	خَاطَبَ ख़ा-तब	قَالَ क़ा-ल
حَفِيْظٌ हफ़ी-ज़ुन्	يَعْمَلُوْنَ यअ़मलू-न	يَشْعُرُوْنَ यश्उरू-न	مُصْلِحُوْنَ मुस्लिहू-न	قُوْلُوْا क़ू-लू
سِيْقَ सी-क़	اُحِيْطَ उही-त	قِيْلَ क़ी-ल	رَحِيْمٌ रही-मुन्	لَطِيْفٌ लती-फुन

प्रेक्टिस

حِيْنَ	تَجْرِىْ	عَجِيْبٌ	عَظِيْمٌ	شَدِيْدٌ ....
نُوْحِيْهَا	حَكِيْمٌ	سَمِيْعٌ	كَرِيْمٌ	ضَرَبُوْا ....
اُوْذِيْنَا	فَقِيْرٌ	يُرِيْدُ	غِيْضَ	حِيْلَ ....
وَكِيْلٌ	مُجِيْبٌ	اَكِيْدُ	مُقِيْتٌ	عَزِيْزٌ ....

07. سَمِيْعٌ समी-अुन् पर वक़्फ़ः करने की सूरत में और इसी तरह जिस हुरूफ़े-मद्दः के बाद वाले हर्फ़ पर वक़्फ़ः करना हो तो उसे साकिन करके हर्फ़े-मद्दः पर तीन या चार अलिफ़ के बराबर मद्द कर सकते हैं। या'नी हर्फ़े-मद्दः को तीन या चार अलिफ़ के बराबर खींचा जा सकता है।

08. مُجِيْبٌ मुजीबुन् पर वक़्फ़ः करते वक़्त मद्द के साथ क़लक़ला भी होगा। इसी तरह شَدِيْدٌ शदीदुन्, سِيْقَ सीक़, عَجِيْبٌ अजीबुन् पर भी वक़्फ़ः के साथ क़लक़ला होगा।

सबक़ नं. : 19

हुरूफ़े लीन

01. वाव साकिन और या साकिन से पहले अगर ज़बर हो तो उनको हुरूफ़े लीन कहते हैं। जैसे بَوْ बौ, تَوْ तौ, ثَوْ ष़ौ और بَیْ बय्, تَیْ तय्, ثَیْ ष़य् वग़ैरह।

02. हुरूफ़े लीन को नर्मी से अदा करें। साथ ही हुरूफ़े लीन और हुरूफ़े मद्दः की आवाज़ में फ़र्क़ भी करें।

03. हुरूफ़े लीन भी हुरूफ़े मद्दः की त़रह़ एक अलिफ़ के बराबर लम्बे किये जाएं लेकिन अदायगी की आवाज़ मा'रूफ़ हो, मजहूल न हो।

جَیْ जय्	جَوْ जौ	ثَیْ ष़य्	ثَوْ ष़ौ	تَیْ तय्	تَوْ तौ	بَیْ बय्	بَوْ बौ
ذَیْ ज़य्	ذَوْ ज़ौ	دَیْ दय्	دَوْ दौ	خَیْ ख़य्	خَوْ ख़ौ	حَیْ हय्	حَوْ ह़ौ
شَیْ शय्	شَوْ शौ	سَیْ सय्	سَوْ सौ	زَیْ ज़य्	زَوْ ज़ौ	رَیْ रय्	رَوْ रौ
ظَیْ ज़य्	ظَوْ ज़ौ	طَیْ त़य्	طَوْ त़ौ	ضَیْ ज़य्	ضَوْ ज़ौ	صَیْ स़य्	صَوْ स़ौ
قَیْ क़य्	قَوْ क़ौ	فَیْ फ़य्	فَوْ फ़ौ	غَیْ ग़य्	غَوْ ग़ौ	عَیْ अ़य्	عَوْ औ़
نَیْ नय्	نَوْ नौ	مَیْ मय्	مَوْ मौ	لَیْ लय्	لَوْ लौ	کَیْ कय्	کَوْ कौ
یَیْ यय्	یَوْ यौ	اَیْ अय्	اَوْ औ	هَیْ हय्	هَوْ हौ	وَیْ वय्	وَوْ वौ

प्रेक्टिस

زَوْجًا ज़ौजन्	قَوْسَيْنِ क़ौसैनि	يَوْمَئِذٍ यौमइज़िन्	قَوْلٌ क़ौलुन्	عَفَوْنَا अफ़ौना
قَوْمِيْ क़ौमी	تَوْبَةً तौबतन्	اَوْتَادًا औतादन्	يَرَوْنَهَا यरौनहा	يَوْمَ यौम
مَوْلُوْدٌ मौलूदुन्	سَوْفَ सौफ़	يَنْهَوْنَ यन्हौन	قَوْمًا क़ौमन्	صَوْمًا सौमन्
اَيْنَ	رُوَيْدًا	كَيْفَ	كَيْدًا	يَنْئَوْنَ ....
وَيْلٌ	عَلَيْهِمْ	هَيْهَاتَ	هَدَيْنَا	قُرَيْشٍ ....
كِفْلَيْنِ	اَعْطَيْنَا	خَيْرًا	عَيْنٌ	عَيْنَيْنِ ....

04. قُرَيْشٍ कुरैशिन् पर वक़्फ़ः की सूरत में मद्द भी कर सकते हैं। ठीक इसी तरह हर्फ़े लीन के बाद वाले हुरूफ़ पर वक़्फ़ः करना हो तो उसे साकिन करके हर्फ़े लीन पर तीन या चार अलिफ़ के बराबर लम्बा मद्द करें।

05. اَعْطَيْنَا आतैना में ط ता मोटी पढ़ी जाएगी ى या और ا अलिफ़ को एक-एक अलिफ़ के बराबर लम्बा करें।

06. رُوَيْدًا रुवैदन् का वक़्फ़ः رُوَيْدَا रुवैद और بَقَرَةٌ बक़रतुन् का वक़्फ़ः بَقَرَةْ बक़रः होगा।

07. عَيْنَيْنِ अेनैनि में दो ى या लीन हैं, इनकी आवाज़ अलग-अलग और मजहूल पढ़ने के बग़ैर हो।

सबक़ नं. : 20

इख़्फ़ा

01. नून साकिन या तन्वीन के बाद अगर ت ता, ث षा, ج जीम, د दाल, ذ ज़ाल, ز ज़ा, س सीन, ش शीन, ص स़ाद, ض ज़ाद, ط त़ा, ظ ज़ा, ف फ़ा, ق क़ाफ़, ك काफ़ में से कोई ह़र्फ़ आए तो वहाँ ग़ुन्ना होगा। इस ग़ुन्ना को 'इख़्फ़ा' कहते हैं। ग़ुन्ना नाक में आवाज़ ले जाने को कहते हैं। ग़ुन्ना एक अलिफ़ के बराबर खींचकर अदा किया जाता है।

02. नून साकिन (जिस नून पर जज़म हो) और ह़ुरूफ़े इख़्फ़ा चाहे एक लफ़्ज़ में आए या दो लफ़्ज़ों में आएं, लेकिन हर ह़ालत में ग़ुन्ना होगा।

03. मीम साकिन के बाद अगर ب बा मुतह़र्रिक आ जाए तो वहाँ इख़्फ़ा, ग़ुन्ना के साथ करके पढ़ेंगे। जैसे مَالَهُمْ بِهٖ मालहुम्-बिही वग़ैरह।

04. हिज्जे का त़रीक़ा : كُنْزٌ कंज़ुन् की हिज्जे इस त़रह़ होगी; काफ़ ज़बर नून साकिन كَنْ कन्, ज़ा दो पेश زٌ ज़ुन् كُنْزٌ कंज़ुन्। इस पर वक़्फ़: كُنْزْ कंज़: की शक्ल में होगा। लफ़्ज़ कन्ज़ुन् में नून साकिन पर ग़ुन्ना करने की वजह से आवाज़ कंज़ुन् की अदा होगी। इसी त़रह़ बाक़ी कलिमात पढ़ने होंगे।

مِنْ قَبْلُ मिन् क़ब्लु = मिंक़ब्लु	مَنْ كَانَ मन्कान = मंकान	مِنْكُمْ मिन्कुम् = मिंकुम्
يُنْفَقُوْا युन्फ़ौ = युंफ़ौ	فَمَنْ تَابَ फ़मन् ताब = फ़मंताब	اِنْ تُصْلِحُوْا इन्तुस्लिहून = इंतुस्लिहून
عِنْدَهٗ ज़िन्दिही = ज़िंदिही	وَالْاَنْفَ वल्अन्फ़ = वल्अंफ़	اَنْزَلَ अन्ज़ल = अंज़ल
يُنْفِقُ युन्फ़िक़ु = युंफ़िक़ु	رَنْقُوْنَ रन्क़ून = रंक़ून	عَنْ دِيْنِهٖ अन्दीनिही = अंदीनिही
लिखने की सूरत / पढ़ने की सूरत	लिखने की सूरत / पढ़ने की सूरत	लिखने की सूरत / पढ़ने की सूरत

प्रेक्टिस

كَنْزٌ कन्ज़ुन् = कंज़ुन्	نَنْسَخْ नन्सख़् = नंसख़्	وَالْاِنْجِيْلَ वल्इंजील
مِنْ دُوْنِهٖ मिन्दूनिही = मिंदूनिही	مُقَنْطَرَةِ मुक़न्तरति = मुक़ंतरति	مَنْضُوْدٍ मन्ज़ूदिन् = मंज़ूदिन्
عَلَى الْاِنْسٰنِ अ़लल्इंसानि	مِنْ طُوْرٍ मिन्तूरि = मिंतूरि	يَنْظُرُوْنَ यन्ज़ुरून = यंज़ुरून
عَنْ ذِكْرِىْ	مِنْ كُتُبٍ	اِنْطَلَقْتُمْ ....
اَنْ صَبَرْنَا	لَئِنْ كَفَرْتُمْ	فَمَنْ زُحْزِحَ ....
ظَنَنْتُمْ	مَنْثُوْرًا	اَنْشَاْنَا ....
خَلْقٍ جَدِيْدٍ	مَسْجِدًا ضِرَارًا	ثَمَنًا قَلِيْلًا ....
فَوْجٌ سَاَلَهُمْ	عَمَلٌ صٰلِحٌ	غَمْرَةٍ سَاهُوْنَ ....
فَاحْكُمْ بَيْنَنَا	عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ	عَلَيْهِمْ بِعِلْمٍ ....
عَلَيْكُمْ بِمَا	يَاْمُرُكُمْ بِهٖ	نُوْرُهُمْ بَيْنَ ....

सबक़ नं. : 21

इज़हार

01. नून साकिन या तन्वीन के बाद अगर ء हम्ज़ा, ه हा, ع अ़ैन, غ ग़ैन, ح ह़ा, خ ख़ा में से कोई ह़र्फ़ आए तो वहाँ इज़हार होगा, या'नी ग़ुन्ना नहीं होगा। इन छह हुरूफ़ को 'हुरूफ़े-ह़लक़ी' कहते हैं।

02. नून साकिन को अदा करने के फ़ौरन बाद वाले ह़र्फ़ को अदा करें, बीच में देर न करें वर्ना इख़्फ़ा हो जाएगा। लेकिन इतनी जल्दी भी न करें कि ह़र्फ़ स़ह़ीह़ ढंग से अदा न हो सके।

03. कुछ लोग अ़ैन और ह़ा को अदा करते वक़्त गला घोंट लेते हैं, या'नी घुटे हुए गले से इन हुरूफ़ को अदा करते हैं; ऐसा नहीं करना चाहिये बल्कि उन्हें निहायत नर्मी के साथ अदा करें।

04. कुछ लोग इज़हार करते वक़्त नून की आवाज़ नाक में ले जाते हैं, ऐसा करना ग़लत है। नून साकिन के बाद फ़ौरन दूसरा ह़र्फ़ अदा करें।

05. हिज्जे का त़रीक़ा : مَنْ اٰمَنَ मन् आमन की हिज्जे इस त़रह़ होगी; मीम ज़बर नून साकिन مَنْ मन्, अलिफ़ खड़ा ज़बर اٰ आ, मीम ज़बर مَ म, नून ज़बर نَ न, مَنْ اٰمَنَ मन् आ-म-न.

اَخُنْهُ अख़ुन्हु	عَنْهُ अ़न्हु	مِنْهُ मिन्हु
مِنْ خِلٰفٍ मिन् ख़िलाफ़िन्	مِنْ عِلْمٍ मिन् अ़िल्मिन्	مِنْ حِكْمَةٍ मिन् ह़िक्मतिन्
مِنْ غَيْرِ मिन् ग़ैरि	عَنْ اَمْرِىْ अ़न् अम्री	مَنْ اٰمَنَ मन् आमन
بِغُلٰمٍ حَلِيْمٍ बिग़ुलामिन् ह़लीमिन्	عَذَابًا اَلِيْمًا अ़ज़ाबन् अलीमन्	فَسَيُنْغِضُوْنَ फ़सयुन्ग़िज़ून

प्रेक्टिस

مِنْ خَيْرٍ	مِنْ عَذَابٍ	مِنْ حَكِيْمٍ
مَنْ حَوْلَهَا	فَمَنْ اُوْتِيَ	مِنْ خَوْفٍ
رَفْرَفٍ خُضْرٍ	فُلَانًا خَلِيْلًا	جُرُفٍ هَارٍ
عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ	نُوْحًا هَدَيْنَا	يَنْعِقُ
اَنْعَمْتَ	عَجُوْزٌ عَقِيْمٌ	عَلِيْمًا حَكِيْمًا

06. कुछ लोग इज़हार के कलिमात में इज़हार करते वक़्त 'सक्तः' कर देते हैं, इससे बचना चाहिये; जैसे اَنْعَمْتَ अन्‌अम्त, يَنْعِقُ यन्‌इक़ु वग़ैरह। या'नी बीच में सांस तोड़कर अन्‌अम्त को अन्‌ अम्त व यन्‌इक़ु को यन्‌ इक़ु नहीं पढ़ना चाहिये।

सबक़ नं. : 22

इक़्लाब

01. 'इक़्लाब' का मा'नी है, बदलना। नून साकिन या तन्वीन के बाद अगर बा आ जाए तो नून को मीम से बदलकर ग़ुन्ना के साथ पढ़ने को इक़्लाब कहते हैं। जैसे فَانْبِذْ फ़म्बिज़् वग़ैरह।

02. यहाँ भी ग़ुन्ना एक अलिफ़ के बराबर किया जाए और ग़ुन्ना के पहले ह़र्फ़ को लम्बा न किया जाए।

03. कुछ लोग इक़्लाब करते वक़्त नून की मिलावट करते हैं। याद रहे, यहाँ सिर्फ़ मीम पढ़ना है, नून नहीं पढ़ना है क्योंकि 'नून', 'मीम' में बदल चुका है।

04. हिज्जे का त़रीक़ा : فَانْبِذْ फ़म्बिज़्; फ़ा ज़बर मीम साकिन فَمْ फ़म्, बा ज़ेर ज़ाल साकिन بِذْ बिज़् = فَانْبِذْ फ़म्बिज़्। इसी त़रह سَمِيْعٌ بَصِيْرٌ समीअ़ुम् बस़ीरुन् की हिज्जे इस त़रह से होगी; सीन ज़बर मीम ज़ेर या साकिन = سَمِيْ समी, अ़ेन दो पेश عٌ अ़ुम्, बा ज़बर स़ाद ज़ेर या साकिन नून दो पेश = بَصِيْرٌ बस़ीरुन्। इस पर वक़्फ़: سَمِيْعٌ بَصِيْر समीअ़ुम् बस़ीर होगा।

تَنْبُتُ तम्बुतु	مِنْ بَعْضٍ मिम्बअ़्ज़िन्	فَانْبِذْ फ़म्बिज़्
مِنْ بَيْنِ मिम्बैनी	مِنْ بُطُوْنِ मिम्बुत़ूनि	مِنْ بَعْدِ मिम्बअ़्दि
يَسْتَنْبِئُوْنَكَ यस्तम्बिऊनक	اَنْ بُوْرِكَ अम्बूरिक	اَنْبَاَكَ अम्बअक
مُحِيْطٌ بِالْكٰفِرِيْنَ मुहीतुम्बिल्काफ़िरीन	سَبَاٍ بِنَبَاٍ सबइम्बिनबइन्	حَدِيْثٍ بَعْدَهٗ हदीस़िम्बअ़्दहू

प्रेक्टिस

مِنْ بَيْنِ	مِنْ بَقْلِهَا	اَنْبَتَتْ
فَانْبَجَسَتْ	اِذِانْبَعَثَ	سُنْبُلٰتٍ
زَوْجٍ بَهِيْجٍ	قَوْلًا بَلِيْغًا	لَامَرْحَبًابِهِمْ
سَمِيْعٌ بَصِيْرٌ	ضَلٰلٍ بَعِيْدٍ	خَيْرًا بَصِيْرًا
اَمَدًا بَعِيْدًا	قَوْمًا بُوْرًا	اٰيٰتٍ بَيِّنٰتٍ
عَلِيْمٌ بِمَا كَانُوْا	جُدَدٌ بِيْضٌ	شَدِيْدٌ بِمَا

सबक़ नं. : 23

इद्ग़ाम

01. एक हर्फ़ को दूसरे हर्फ़ में दाख़िल करके तश्दीद के साथ पढ़ने को 'इद्ग़ाम' कहते हैं। नून साकिन या तन्वीन के बाद अगर ی या, م मीम, و वाव, ن नून में से कोई हर्फ़ आए तो ग़ुन्ना के साथ इद्ग़ाम होगा और नून साकिन या तन्वीन के बाद अगर लाम या रा में से कोई हर्फ़ आए तो ग़ुन्ना के बग़ैर इद्ग़ाम होगा।

02. मीम साकिन के बाद अगर मीम मुतहर्रिक आ जाए तो मीम साकिन को मीम मुतहर्रिक में इद्ग़ाम करके ग़ुन्ना के साथ पढ़ेंगे। जैसे مِنْهُمْ مَّا मिन्हुंम्मा

03. हिज्जे का तरीक़ा : مَنْ يَّقُوْلُ मंय्यक़ूलु की हिज्जे इस तरह होगी; मीम ज़बर या يَ या ज़बर يَ = مَنْ يَّ मंय्य, क़ाफ़ पेश वाव साकिन قُوْ क़ू, लाम पेश لُ लु = مَنْ يَّقُوْلُ मंय्यक़ूलु। इसी तरह दूसरे लफ़्ज़ों की भी हिज्जे की जाएगी।

مِنْ نُّوْرٍ मिन्नूर	مِنْ مَّنٍ मिम्मन्	مَنْ يَّقُوْلُ मंय्यक़ूलु
مَنْ يَّكْفُرْ मंय्यक्फ़ुर्	مِنْ نُّطْفَةٍ मिन्नुत़फ़तिन्	مِنْ مَّطَرٍ मिम्मत़रिन्
قَصْرٍ مَّشِيْدٍ क़स़्रिम्मशीदिन्	مِنْ وَّرَقٍ मिंव्वरक़ि	مِنْ وُّجْدِكُمْ मिंव्वुजिद्कुम्
لَيْلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ लैलतिम्मुबारकतिन्	عِظَامًا نَّخِرَةً अिज़ामन्नख़िरतन्	نُوْحٍ وَّعَادٍ नूहिंव्व आदिन्
لَهُمْ مَّشَوْا लहुम्मशौ	قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ कुलूबिहिंम्मरज़ुन	مِنْكُمْ مِّيْثَاقًا मिंकुम्मीस़ाक़न्

प्रेक्टिस

جُمْلَةً وَّاحِدَةً	قَرْيَةٍ نَّذِيْرًا	نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ
هَادِيًا وَّنَصِيْرًا	خَيْرٌ نُّزُلًا	عَيْنًا يَّشْرَبُ
بِدُخَانٍ مُّبِيْنٍ	بِبَاسِطٍ يَّدِيَ	بَشَرٌ مِّثْلُنَا
مِيْقَاتًا يَّوْمَ	بَخِعٌ نَّفْسَكَ	عَادٌ وَّثَمُوْدُ
قَمَرًا مُّنِيْرًا	خَيْرًا يَّرَهٗ	اَنْ يُّخْرِجَكُمْ
عَلَيْهِمْ مَّسْجِدًا	لَكُمْ مِّنْهُ	عَنْهُمْ مَّا

04. قِنْوَانٌ क़िन्वानुन्, صِنْوَانٌ सिन्वानुन्, دُنْيَا दुन्या, بُنْيَانٌ बुन्यानुन् वग़ैरह में इदग़ाम नहीं होगा, बल्कि सिर्फ़ इज़हार के उसूल पर इन्हें पढ़ा जाएगा।

सबक़ नं. : 24

नून क़ुत्नी

01. तन्वीन के बाद अगर हम्ज़ा वस्ल हो और उसके बाद आने वाला हर्फ़ जज़म वाला हो तो तन्वीन के नून को ज़ेर के साथ पढ़ा जाता है क्योंकि हम्ज़ा वस्ली बीच में ख़त्म हो जाता है। जैसे نُوْحُ ۨابْنَهٗ नूहुनिब्नहू, **इस नून को नून क़ुत्नी कहते हैं।**

02. नून क़ुत्नी से लफ़्ज़ की शुरूआत नहीं हो सकती बल्कि आगे आने वाले वस्ली हम्ज़ा से शुरूआत होती है; जैसे نُوْحُ ۨابْنَهٗ नूहुनिब्नहू में نُوْحُ नूह पर वक़्फ़: करें तो اِبْنَهٗ इब्नहू से शुरूआत करेंगे, उस स्थिति में ۨابْنَهٗ निब्नहू पढ़ना ग़लत होगा।

03. **हिज्जे का तरीक़ा :** नूहुनिब्नहू के हिज्जे इस तरह होंगे; **नून** पेश **वाव** जज़म نُوْ नू, **हा** पेश حُ हु, **नून** ज़ेर **बा** जज़म نِبْ निब, **नून** ज़बर نَ न, **हा** उल्टा पेश هٗ हू = نُوْحُ ۨابْنَهٗ **नूहुनिब्नहू।** इस पर वक़्फ़: इस तरह किया जाएगा, نُوْحُ ۨابْنَهْ **नूहुनिब्नह.**

सबक़

خَبِيْثَةِ ۨاجْتُثَّتْ ख़बीष़तिनिज्तुष़्षुत्	لُوْطِ ۨالْمُرْسَلِيْنَ लूतिनिल्मुर्सलीन	نُوْحُ ۨابْنَهٗ नूहुनिब्नहू
فِتْنَةُ ۨانْقَلَبَ फ़ित्नतुनिन्क़लब	عَدْنِ ۨالَّتِىْ अद्निनिल्लती	قَدِيْرُ ۨالَّذِىْ क़दीरुनिल्लज़ी
بِزِيْنَةِ ۨالْكَوَاكِبِ बिज़ीनतिनिल्कवाकिबि	جَمِيْعًا ۨالَّذِىْ जमीअनिल्लज़ी	اَحَدُ ۨاللّٰهُ अहदुनिल्लाहु
زُجَاجَةِ ۨالزُّجَاجَةُ ज़ुजाजतिनिज़्ज़ुजाजतु	عُزَيْرُ ۨابْنُ अुज़ैरुनिब्नु	يَوْمَئِذِ ۨالْمُسْتَقَرُّ यौमइज़िनिल्मुस्तक़र्रु

प्रेक्टिस

طُوًى ۝ اذْهَبْ तुवनिज़हब्	اَلِيْمًا ۝ الَّذِيْنَ अलीमनिल्लज़ी	نُفُوْرًا ۝ اسْتِكْبَارًا नुफ़ूरनिस्तिक्बारन्
لُمَزَةِ الَّذِىْ	مَثَلًا الْقَوْمُ	خَيْرُ اطْمَاَنَّ ....
نُوْحِ الْمُرْسَلِيْنَ	مِصْبَاحُ الْمِصْبَاحُ	مُبِيْنِ اقْتُلُوْا ....
قَرْيَةِ اسْتَطْعَمَا	شِيْئًا اتَّخَذَهَا	بَعْضِ الْقَوْلَ ....
خَبِيْرًا ۝ الَّذِىْ	كَرَمَادِ اشْتَدَّتْ	عَادًا الْاُوْلٰى ....
شِيْبًا ۝ اَلسَّمَآءُ	مُنِيْبِ ۝ ادْخُلُوْهَا	فَخُوْرًا ۝ الَّذِيْنَ ....

04. جَمِيْعًا الَّذِىْ को جَمِيْعَنِ الَّذِىْ जमीअ़निल्लज़ी पढ़ना है। या'नी इसमें ‌अ़ेन के साथ अलिफ़ पढ़ना ग़लत़ है। इसी त़रह اَلِيْمًا ۝ الَّذِىْ अलीमनिल्लज़ी और نُفُوْرًا ۝ اسْتِكْبَارًا नुफ़ूरनिस्तिक्बारन् को भी बग़ैर अलिफ़ के पढ़ना है।

सबक़ नं. : 25

तशदीद ّ

01. तशदीद की शक्ल ऊपर दशाई गई है। इसमें तीन दाँते होते हैं। **हुरूफ़ की शद (दोहराव) वाली ह़ालत को तशदीद कहते हैं और जिस ह़र्फ़ पर तशदीद हो उसे मुशद्दद कहते हैं।**

02. मुशद्दद ह़र्फ़ **दो बार** पढ़ा जाता है। यही नहीं मुशद्दद ह़र्फ़ को उसके पहले वाले ह़र्फ़ के साथ मिलाकर पढ़ा जाता है।

03. मुशद्दद ह़र्फ़ की अदायगी के वक़्त ह़र्फ़ को खींचने से बचें। ن **नून** और م **मीम** मुशद्दद पर एक अलिफ़ के बराबर ग़ुन्ना करें।

04. शद से पहले वाले ह़र्फ़ को भी लम्बा होने से बचाएं। जैसे اَبَّ **अब्ब** में **बा** मुशद्दद से पहले अलिफ़ को न खींचे कि آبَّ **आब्ब** की आवाज़ निकले। ऐसा करना ग़लत होगा। इसी त़रह اَتَّ **अत्त,** اَثَّ **अष़्ष़** वग़ैरह का भी तलफ़्फ़ुज़ (उच्चारण) करें।

اَتُّ अत्तु	اَتِّ अत्ति	اَتَّ अत्त	اَبُّ अब्बु	اَبِّ अब्बि	اَبَّ अब्ब
اَجُّ अज्जु	اَجِّ अज्जि	اَجَّ अज्ज	اَثُّ अष़्षु	اَثِّ अष़्षि	اَثَّ अष़्ष
اَخُّ अख़्ख़ु	اَخِّ अख़्ख़ि	اَخَّ अख़्ख़	اَحُّ अह़्ह़ु	اَحِّ अह़्ह़ि	اَحَّ अह़्ह़
اَذُّ अज़्ज़ु	اَذِّ अज़्ज़ि	اَذَّ अज़्ज़	اَدُّ अद्दु	اَدِّ अद्दि	اَدَّ अद्द
اَزُّ अज़्ज़ु	اَزِّ अज़्ज़ि	اَزَّ अज़्ज़	اَرُّ अर्रु	اَرِّ अर्रि	اَرَّ अर्र

اَشُّ अश्शु	اَشِّ अश्शि	اَشَّ अश्श	اَسُّ अस्सु	اَسِّ अस्सि	اَسَّ अस्स
اَضُّ अज़्ज़ु	اَضِّ अज़्ज़ि	اَضَّ अज़्ज़	اَصُّ अस़्स़ु	اَصِّ अस़्स़ि	اَصَّ अस़्स़
اَظُّ अज़्ज़ु	اَظِّ अज़्ज़ि	اَظَّ अज़्ज़	اَطُّ अत्तु	اَطِّ अत्ति	اَطَّ अत्त
اَغُّ अग़्ग़ु	اَغِّ अग़्ग़ि	اَغَّ अग़्ग़	اَعُّ अअ़्अ़ु	اَعِّ अअ़्अ़ि	اَعَّ अअ़्अ़
اَقُّ अक़्क़ु	اَقِّ अक़्क़ि	اَقَّ अक़्क़	اَفُّ अफ़्फ़ु	اَفِّ अफ़्फ़ि	اَفَّ अफ़्फ़
اَلُّ अल्लु	اَلِّ अल्लि	اَلَّ अल्ल	اَكُّ अक्कु	اَكِّ अक्कि	اَكَّ अक्क
اَنُّ अन्नु	اَنِّ अन्नि	اَنَّ अन्न	اَمُّ अम्मु	اَمِّ अम्मि	اَمَّ अम्म
اَهُّ अह्हु	اَهِّ अह्हि	اَهَّ अह्ह	اَوُّ अव्वु	اَوِّ अव्वि	اَوَّ अव्व
اَىُّ अय्यु	اَىِّ अय्यि	اَىَّ अय्य	اَءُّ अअ्अु	اَءِّ अअ्अि	اَءَّ अअ्अ

05. हरकात के बाद **वाव** और **या** मुशद्दद आ जाएं तो उन्हें बग़ैर गुन्ना के सख़्ती से अदा करें। जैसे زُوِّجَتْ ज़ुव्विजत, قَيِّمَةٌ क़य्यिमतुन् वग़ैरह।

06. अगर वाव और या गुन्ना वाले हों जैसे, مَنْ يَّقُوْلُ मंय्यक़ूलु, مِنْ وَّالٍ मिंव्वालिन् वग़ैरह; तो वहाँ गुन्ना के साथ उच्चारण करें।

07. हर्फ़े मद्द: के बाद अगर मुशद्दद हर्फ़ आए तो वहाँ मद्द करना लाज़मी है। जैसे, كَآفَّةً काऽऽफ़्फ़तन, حَآجَّهٗ हाऽऽज्जहू वग़ैरह।

08. मुशद्दद हर्फ़ पर वक़्फ़: एहतियात के साथ किया जाए और क़लक़ला न होने दें। अगर वक़्फ़: वाला हर्फ़ क़लक़ला वाला हो तो वहाँ क़लक़ला ज़रूर करें; जैसे بِغَيْرِالْحَقِّ बिग़ैरिल्हक़्क़ि वग़ैरह।

09. ن नून, ی या, ر रा मुशद्दद पर भी वक़्फ़: एहतियात से करें क्योंकि यहाँ पर अक्सर ग़लती होती है।

प्रेक्टिस

زُوِّجَتْ ज़ुव्विजत्	مُسَلَّمَةٌ मुसल्लमतुन्	يَتَفَجَّرُ ....
بِقُوَّةٍ बिक़ुव्वतिन्	حَآجَّهٗ हाऽऽज्जहू	تَوَلَّيْتُمْ ....
مَنْ يَّقُوْلُ मंय्यक़ूलु	مِنْ يَّوْمٍ मिंय्यौमिन्	مَنْ يُّفْسِدُ ....
عَيْنًا يَّشْرَبُ अैनंय्यशरबु	خَيْرٌ نُّزُلًا ख़ैरुन्नुज़ुलन्	خَلْقٍ نُّعِيْدُهٗ ....
بِبَاسِطٍ يَّدِيَ बिबासितिंय्यदिय	سِرَاجًا مُّنِيْرًا सिराजंम्मुनीरा	خَيْرًا يَّرَهٗ ....
لُجِّيٍّ يَّغْشٰهُ लुज्जिय्यिंय्यग़शाहु	دُرِّيٌّ يُّوْقَدُ	حَبًّا وَّنَبَاتًا ....
مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ मुस्तक़र्रुंव् व मताअुन्	مُعَلَّمٌ مَّجْنُوْنٌ	رَسُوْلًا نَّبِيًّا ....

सबक़ नं. : 26

लाम का बयान

01. लफ़्ज़ اَللّٰهُ अल्लाहु और اَللّٰهُمَّ अल्लाहुम्म् के लाम से पहले ज़बर या पेश हो तो उसे पुर (मोटा, भारी) पढ़ेंगे; और अगर ज़ेर हो तो बारीक (पतली आवाज़) में पढ़ेंगे। इनके अ़लावा बाक़ी सब लाम बारीक पढेंगे।

02. लाम के मोटा (भारी) पढ़े जाने की मिषालें :

مِنَ اللّٰهِ मिनल्लाहि	تَاللّٰهِ तल्लाहि	اَللّٰهُ अल्लाहु
قَالُوا اللّٰهُمَّ क़ालुल्लाहुम्म	سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ सुब्हानकल्लाहुम्म	رَسُوْلُ اللّٰهِ रसूलुल्लाहि

03. लाम के बारीक पढ़े जाने की मिषालें :

لِلّٰهِ लिल्लाहि	بِاللّٰهِ बिल्लाहि	بِسْمِ اللّٰهِ बिस्मिल्लाहि
سَبِيْلِ اللّٰهِ सबीलिल्लाहि	قُلِ اللّٰهُمَّ कुलिल्लाहुम्म	اَعُوْذُ بِاللّٰهِ अऊ़ज़ुबिल्लाहि

04. इनके अ़लावा बाक़ी सब लाम बारीक पढ़े जाएंगे :

يُضِلُّ युज़िल्लु	تَوَلّٰى तवल्ला	تَجَلّٰى तजल्ला
صَلٰوةِ स़लाति	فَصَلِّ फ़स़ल्लि	حِلٌّ हिल्लुन्

सबक़ नं. : 27

मद्दात (मद्द का बहुवचन)

01. मद्द का मा'नी लम्बा करना और खींचना है।

02. हुरूफ़े मद्द के बाद अगर हम्ज़ा उसी कलिमे में हो तो उसे 'मद्द वाजिब' कहते हैं। इसकी मिक़्दार (मात्रा) तीन से चार अलिफ़ के बराबर है, जैसे

سُوْٓءَ सूऽऽअ	جِائْٓءَ जीऽऽअ	جَآءَ जाऽऽअ
يَشَآءُ यशाऽऽउ	دُعَآءِ दुआऽऽइ	اَوْلِيَآءَ औलियाऽऽअ

03. हुरूफ़े मद्द के बाद अगर हम्ज़ा किसी दूसरे कलिमे के शुरू में हो तो उसे 'मद्दे जाइज़' कहते हैं। इसकी मिक़्दार तीन से चार अलिफ़ है, जैसे,

مَآ اَمَرَ माऽ अमर	بَنِيْٓ اٰدَمَ बनीऽ आदम	مَآ اَصَابَ माऽअस़ाब
اِلٰٓى اَجَلٍ इलाऽअजलिन्	كَمَآ اُرْسِلَ कमाऽउर्सिल	قَالُوْٓا اٰمَنَّا क़ालूऽ आमन्ना

04. हुरूफ़े मद्द के बाद वाले ह़र्फ़ पर शद्द हो तो उसे 'मद्दे लाज़िम कलमी मुषक़्क़ल' कहते हैं। इसकी मिक़्दार पाँच से छह अलिफ़ है, जैसे,

وَالصّٰٓفّٰتِ वस़्स़ाऽऽफ़्फ़ाति	حَآجَّهٗ हाऽऽज्जहू	دَآبَّةٍ दाऽऽब्बतिन्
اَتُحَآجُّوْٓنِّيْ अतुहाऽऽज्जूऽऽन्नी	وَلَا الضَّآلِّيْنَ वलज़्ज़ाऽऽल्लीन	وَلَا تَحَآضُّوْنَ वला तहाऽऽज़्ज़ूऽऽन

05. हुरूफ़े मद्द के बाद वाले ह़र्फ़ पर अगर जज़म हो तो उसे 'मद्दे लाज़िम कलमी मुख़फ़्फ़फ़' कहते हैं। इसकी मिक़्दार पाँच से छह अलिफ़ है, जैसे, آٰلْئٰنَ

हुरूफ़े मुक़त्तआत

01. ऐसे हुरूफ़ जिनको क़ुर्आन मजीद में तिलावत के दौरान अलग-अलग पढ़ा जाता है, जिनके मा'नी (अर्थ) के बारे में किसी को कोई इल्म (ज्ञान) नहीं है, उन्हें 'हुरूफ़े मुक़त्तआत' कहते हैं।

02. ये हुरूफ़, क़ुर्आन मजीद की 29 सूरतों के शुरू में आते हैं।

طٰهٰ ता-हा	طٰسٓ ता-सीऽऽन	يٰسٓ या-सीऽऽन	حٰمٓ हा-मीऽऽम
طٰسٓمٓ ता-सीम्ऽऽमीम	الٓر अलिफ़ लाऽऽम् रा	الٓمٓ अलिफ़ लाऽऽम् मीऽऽम	
حٰمٓ عٓسٓقٓ हा मीम ऐन सीन क़ाफ़	الٓمٓرٰ अलिफ़ लाम् मीम रा	الٓمٓصٓ अलिफ़ लाम् मीम स़ाद	
نٓ नून	قٓ क़ाफ़	صٓ स़ाद	كٓهٰيٰعٓصٓ काफ़ हा या ऐन स़ाद

अलिफ़ लाम मीम में अलिफ़ के बाद चार-पाँच या छह अलिफ़ के बराबर मद्द, फिर मीम पर ग़ुन्ना और फिर मीम पर उसी त़रह मद्द होगी। त़ा सीम् मीम में त़ा पर एक अलिफ़ के बराबर, सीन पर पाँच-छह अलिफ़ के बराबर मद्द, फिर मीम पर ग़ुन्ना और मीम पर उसी त़रह मद्द होगी।

काफ़ हा ऐन या ऐन स़ाद में ऐन पर और हा मीम ऐन सीन क़ाफ़ में ऐन और सीन पर मद्द के बाद ग़ुन्ना के साथ इख़्फ़ा करें।

त़ा हा में त़ा और हा को एक अलिफ़ के बराबर खींचें। जहाँ भी खड़ा ज़बर व उल्टा पेश हो उसको एक अलिफ़ के बराबर खींचकर पढ़ें। कुछ लोग इन्हें ज़्यादा बढ़ाकर पढ़ते हैं, जो कि ग़लत़ है।

सबक़ नं. : 29

पढ़ने और लिखने के दौरान बदलने वाले अल्फ़ाज़

01. नीचे कुछ अल्फ़ाज़ दर्शाए गये हैं, जिन्हें लिखा किसी और रूप में जाता है और पढ़ा दूसरे रूप में जाता है।

पढ़ने की सूरत	लिखने की सूरत	पढ़ने की सूरत	लिखने की सूरत
ثَمُوْدَ षमूद	ثَمُوْدَاْ	اَفَئِنْ अफ़इन्	اَفَإِيْنْ
وَمَلَئِهِمْ व मलइहिम्	وَمَلَإِيْهِمْ	مَلَئِهٖ मलइही	مَلَإِيْهٖ
وَاَنْ اَتْلُوَ व अन् अत्लु-व	وَاَنْ اَتْلُوَاْ	لِتَتْلُوَ लितत्लु-व	لِتَتْلُوَاْ
وَنَبْلُوَ वनब्लु-व	وَنَبْلُوَاْ	لِيَبْلُوَ लियब्लु-व	لِيَبْلُوَاْ
لِيَرْبُوَ लियरबु-व	لِيَرْبُوَاْ	لَنْ نَّدْعُوَ लन्नंद्‌अु-व	لَنْ نَّدْعُوَاْ
مِئَتَيْنِ मिअतैनि	مِاْئَتَيْنِ	مِئَةٌ मिअतुन्	مِاْئَةٌ
مِنْ نَّبَاِ मिन्नंबइ	مِنْ نَّبَاِیْ	لَاَذْبَحَنَّهٗ लअज़्बहन्नहू	لَاَاْذْبَحَنَّهٗ
قَوَارِيْرَ क़वारीर	قَوَارِيْرَاْ	لِشَیْءٍ लिशैइन्	لَشَاْیْءٍ

पढ़ने की सूरत	लिखने की सूरत	पढ़ने की सूरत	लिखने की सूरत
بَسْطَةً बस्ततन्	بَصْۜطَةً	يَبْسُطُ यब्सुतु	يَبْصُۜطُ
اَوْيَعْفُوَ औ-यअ्फ़ु-व	اَوْ عُفُوْا	بِئْسَ لِسْمُ बिअ्सलिस्मु	بِئْسَ الِاسْمُ

02. ऊपर लिखे गये अल्फ़ाज़ की ख़ूब अच्छी तरह प्रेक्टिस करें ताकि क़ुर्आन पढ़ते वक़्त ग़लती न हो।

03. सूरह दहर में जो दूसरा قَوَارِيْرَا क़वारीर है, उसका अलिफ़ वस़्ल और वक़्फ़: दोनों ही सूरतों में नहीं पढ़ा जाएगा।

04. اَمْ هُمُ الْمُصَيْطِرُوْنَ अम् हुमुल्मुसैतिरून का तलफ़्फ़ुज़ (उच्चारण) स़ाद या सीन दोनों से करना दुरुस्त है। लेकिन يَبْصُۜطُ यब्सुतु व بَصْۜطَةً बस्ततन् में सिर्फ़ सीन पढ़नी चाहिये जबकि بِمُصَيْطِرٍ बिमुसैतिरिन् में स़ाद पढ़ना चाहिये।

05. नीचे दिये गये अल्फ़ाज़ में अलिफ़ वक़्फ़: की सूरत में तो पढ़ा जाएगा लेकिन वस़्ल की सूरत में नहीं पढ़ा जाएगा।

वक़्फ़: की सूरत	पढ़ने की सूरत	लिखने की सूरत
اَنَا अना	اَنَ अन	اَنَاْ (क़ुर्आन में जहाँ भी आए)
لٰكِنَّا लाकिन्ना	لٰكِنَّ लाकिन्न	لٰكِنَّاْ
سَلَاسِلَا सलासिला	سَلَاسِلَ सलासिल	سَلَاسِلَاْ

वक़्फ़ः की सूरत	पढ़ने की सूरत	लिखने की सूरत
اَلظُّنُوْنَا अज़्ज़ुनूना	اَلظُّنُوْنَ अज़्ज़ुनून	اَلظُّنُوْنَاْ
اَلرَّسُوْلَا अर्रसूला	اَلرَّسُوْلَ अर्रसूल	اَلرَّسُوْلَاْ
اَلسَّبِيْلَا अस्सबीला	اَلسَّبِيْلَ अस्सबील	اَلسَّبِيْلَاْ
قَوَارِيْرَا क़वारीरा	قَوَارِيْرَ क़वारीर	قَوَارِيْرَاْ (सूरह दहर में पहला वाला)

06. सूरह दहर में जो पहला क़वारीर है उसका अलिफ़ वक़्फ़ः में पढ़ा जाएगा और वस़्ल में नहीं पढ़ा जाएगा।

सबक़

ذُرِّيَّتَهٗ ज़ुर्रिय्यतहू	سَبِّحْهُ सब्बिह्हु	اَعُوْذُ अऊज़ु	عَهِدَ अहिद	عٰهَدَ आहद
سٰحِرٍ साहिरिन्	سَحَّارٍ सह्हारिन्	آللّٰهُ आऽऽल्लाहु	آلْئٰنَ आऽऽल्आन	وَجْهَهٗ वज्हहू

طُبِعَ عَلٰى तुबिअ अला	مَبْعُوْثُوْنَ मब्ऊसून	جِبَاهُهُمْ जिबाहुहुम्	ءَاَنْذَرْتَهُمْ अअन्ज़र्तहुम्
آلذّٰكِرِيْنَ आऽऽज़्ज़ाकिरीन	بِمُزَحْزِحِهٖ बिमुज़हज़िहिही	اَنْ يُّعَمَّرَ अंय्युअम्मर	وَاعْتَصِمُوْا वअ़तसिमू
اَلْمُطَّهِّرِيْنَ अल्मुत्तह्हिरीन	فٰعِلِيْنَ फ़ाइलीन	عَلٰى عَقِبَيْهِ अला अक़िबैहि	اَلْعٰلَمِيْنَ अल्आलमीन

لُجِّيٍّ يَّغْشٰهُ लुज्जियिंय्यग़्शाहु	اِنَّ اللّٰهَ عَهِدَ इन्नल्लाह अ़हिद	يَدُعُّوْنَ دَعًّا युदअ़ऊन दअ़अन्
عَلٰٓى اَعْقٰبِكُمْ अ़लाऽ अअ़क़ाबिकुम्	اَحْسَنَ الْقَصَصِ अह्सनल्क़स़स़ि	يٰنُوْحُ اهْبِطْ या नूहुह्बित़्
لَفِيْ عِلِّيِّيْنَ लफ़ी अ़िल्लिय्यीन	فِرْعَوْنُ ائْتُوْنِيْ फ़िरअ़ौनुअ्तूनी	اَتُحَآجُّوْٓنِّيْ अतुहाज्जूऽन्नी

مِنْ مَّنِيٍّ يُّمْنٰى मिम्मनिय्यिय् युम्ना	وَعَلٰٓى اُمَمٍ مِّمَّنْ مَّعَكَ व अ़लाऽ उममिंम मिम्मम् मअ़क
فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ फ़मन् ज़ुह्ज़िह अ़निन्नारि	وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ व मा क़दरुल्लाह हक़्क़ क़द्रिही
جَنَّةٍ م بِرَبْوَةٍ जन्नतिम् बि-रब्वतिन्	صُمٌّ بُكْمٌ स़ुम्मुम् बुक्मुन्
لَيًّا بِاَلْسِنَتِهِمْ लय्यंम्बिअल् सिनतिहिम्	مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ मुस्तक़र्रुंव् व मताअ़ुन्
خُضْرٌ وَّاِسْتَبْرَقٌ खुज़्रुंव्व इस्तब्रकुन्	حَبًّا وَّنَبَاتًا हब्बंव्व नबातन्

07. ऊपर लिखे गये अल्फ़ाज़ की प्रेक्टिस बहुत एहतियात़ से कीजिये क्योंकि अक्षर हाफ़िज़ भी इनमें ग़लती करते हैं। इन कलिमात में जो मुशद्दद ह़र्फ़ आए हैं उनको मुशद्दद पढ़ें और जो साकिन हों उनका सुकून अदा किया जाए। जो हुरूफ़ भारी हैं, उनको भारी और जो बारीक हैं उनको बारीक पढ़ें। जिसमें तीन गुन्ने आए हैं वो कामिल अदा होंगे।

08. مَجْرٖهَا का तलफ़्फ़ुज़ (उच्चारण) مَجْرٖے هَا मजरेहा होगा या'नी इसे उर्दू लफ़्ज़ क़त़रे की त़रह पढ़ेंगे। इसे مَجْرِيْ هَا मजरीहा पढ़ना ग़लत़ होगा।

सबक़ नं. : 30

वक़्फ़ः का बयान

वक़्फ़ः के बारे में वैसे तो हर सबक़ के आख़िर में उसका तरीक़ा लिखा गया है लेकिन इसकी अहमियत को देखते हुए तमाम क़िस्म के वक़्फ़ों का बयान मिसालों के साथ इस सबक़ में पेश किया जा रहा है ताकि इल्मे-वक़्फ़ः के बारे में जानकारी हो और ग़लतियों से बचा जा सके। अक्सर वक़्फ़ः के बारे में पर्याप्त जानकारी न होने के कारण और वक़्फ़ः का तरीक़ा मा'लूम न होने के कारण ग़लत पढ़ जाते हैं।

ज़बर पर वक़्फ़ः : जिस कलिमे के आख़िर में एक ज़बर हो, उसे वक़्फ़ः की सूरत में (जज़म के साथ) साकिन करके पढ़ें; जैसे فَرَضَ को فَرَضْ पढ़ना है।

दो ज़बर पर वक़्फ़ः : जिस कलिमे के आख़िर में दो ज़बर हो उसे वक़्फ़ः की सूरत में अलिफ़ से बदलकर एक अलिफ़ के बराबर लम्बा करके पढ़ें; जैसे جَنَفًا को جَنَفَا पढ़ना है।

ज़ेर या दो ज़ेर पर वक़्फ़ः : जिस कलिमे के आख़िर में एक या दो ज़ेर हों, उसे वक़्फ़ः की सूरत में साकिन करके पढ़ें; जैसे, قَمَرٍ को قَمَرْ व بِدَمٍ को بِدَمْ

पेश या दो पेश पर वक़्फ़ः : जिस कलिमे के आख़िर में एक या दो पेश हों, उसे वक़्फ़ः की सूरत में साकिन करके पढ़ें; जैसे, رُسُلُ को رُسُلْ व مَلَكٌ को مَلَكْ

गोल ता पर वक़्फ़ः : जिस कलिमे के आख़िर में गोल ता ة हो, उस पर चाहे एक या दो ज़बर, ज़ेर या पेश हो तो उसे वक़्फ़ः की सूरत में ہ हा साकिन से बदलकर पढ़ें; जैसे لُمَزَةٍ को لُمَزَہْ पढ़ा जाएगा।

हर्फ़े-वक़्फ़ः से पहले हर्फ़े-मद्दः हो : जब मद्दः वाले हर्फ़ के बाद वाले हर्फ़ पर वक़्फ़ः करना हो तो उसे साकिन करके हर्फ़े-मद्दः पर तीन या चार अलिफ़ के बराबर मद्दः कर सकते हैं; जैसे, يَعْلَمُوْنَ से يَعْلَمُوْنْ वग़ैरह।

हर्फ़े-वक़्फ़ः से पहले हर्फ़े-लीन हो : जब हर्फ़े-लीन के बाद वाले हर्फ़ पर वक़्फ़ः करना हो तो उसे साकिन करके वक़्फ़ः की सूरत में हर्फ़े-लीन पर मद्द भी कर सकते हैं; जैसे, قُرَيْشٍ से قُرَيْشْ वग़ैरह।

सबक़ नं. : 31

क़ुर्आनी रुमूज़े औक़ाफ़ (निशानात)

01. तिलावत के दौरान इन रुमूज़े-औक़ाफ़ का ख़याल रखना चाहिये,

○ जहाँ आयत पूरी हो जाती है वहाँ एक छोटा सा दायरा बना होता है। ये हक़ीक़त में आयत की गोल ता ة है जिसने गोल दायरे की शक्ल इख़्तियार कर ली है। ये वक़्फ़ः की निशानी है, इस पर ठहरना चाहिये।

م ये वक़्फ़े लाज़िम की निशानी है, इस पर ज़रूर ठहरना चाहिये। अगर न ठहरा जाए तो मा'नी व मफ़हूम बदल जाने का अंदेशा है।

ط ये वक़्फ़े मुतलक की निशानी है, इस पर ठहरना चाहिये।

ج ये वक़्फ़े जाइज़ की निशानी है, इस पर ठहरना बेहतर और न ठहरना जाइज़ है।

قف इसके मा'नी है, 'ठहर जाओ', इस पर ठहरना चाहिये।

02. नीचे लिखे रुमूज़े औक़ाफ़ पर नहीं ठहरना चाहिये,

لا इसके मा'नी हैं, 'नहीं'. ये निशानी अगर आयत के अन्दर हो तो हर्गिज़ नहीं ठहरना चाहिये और अगर आयत के दायरे के ऊपर हो तो ठहरना व न ठहरना दोनों जाइज़ है।

ز यह वक़्फ़ः-ए-मुजव्वज़ की निशानी है, यहाँ न ठहरना बेहतर है।

ص ये वक़्फ़ः-ए-मुरख़्ख़स की निशानी है, यहाँ मिलाकर पढ़ना चाहिये। अगर ज़रूरत के वक़्त ठहर जाए तो छूट है। यह भी याद रहे कि ص पर मिलाकर पढ़ना, ز की बनिस्बत ज़्यादा तरजीह रखता है।

صلے ये اَلْوَصْلُ اَوْلٰی का छोटा रूप है, यहाँ मिलाकर पढ़ना बेहतर है।

ق ये قِيْلَ عَلَيْهِ الْوَقْفُ का ख़ुलासा है, यहाँ नहीं ठहरना चाहिये।

صل ये قَدْ يُوْصَلُ की निशानी है, यहाँ कभी ठहरा जाता है और कभी नहीं ठहरा जाता। अलबत्ता ठहरना बेहतर है।

03. कुछ मशहूर औक़ाफ़ की वज़ाहत :

وَقْفُ النَّبِيِّ ﷺ इसका मतलब यह है कि यहाँ नबी करीम (ﷺ) ने वक़्फ़ः किया है और यहाँ ठहरना मुस्तहब है।

وَقْفِ مُنَزَّلْ इसको वक़्फ़ः-ए-जिब्रईल (अलैहि.) भी कहते हैं, यहाँ वक़्फ़ः करना मुस्तहब है।

وَقْفِ غُفْرَان 'गुफ़रान' का मा'नी है, 'बहुत ज़्यादा बख़्शिश तलब करना।' यहाँ पर पढ़ने और सुनने वाले का बख़्शिश मांगनी चाहिये। यहाँ वस्ल करने के बजाय वक़्फ़ः करना बेहतर है।

س या سكته ये सक्तः की निशानी है, यहाँ ठहरना चाहिये मगर सांस न टूटे।

وقفه ये लम्बे सक्ते की निशानी है, यहाँ सांस तोड़े बिना सक्ते से ज़्यादा ठहरें।

∴ ∴ ये क़रीब-क़रीब दो जगह तीन नुक़्ते होते हैं, जिसे مُعَانَقَة 'मुआनक़ः' की निशानी कहते हैं। क़ुर्आन के हाशिये पर लिखा लफ़्ज़ مع 'मअ' इसी का छोटा रूप है। इन दोनों मक़ामात में से किसी एक पर ठहरना चाहिये।

ك ये كَذٰلِكَ कज़ालिक का छोटा रूप है, इसका मतलब है कि वक़्फ़ः की जो निशानी पहले गुज़री है, इस जगह भी वही हुक्म है।

۵ कूफ़ियों के अलावा दीगर क़ारियों के नज़दीक यहाँ एक आयत होती है। अगर कोई यहाँ वक़्फ़ः करे तो उसे लौटना ज़रूरी नहीं।

04. अहम मा'लूमात :

الرُّبع यह पारे के चौथाई हिस्सा होने की निशानी है।

النِّصْف यह पारे के आधा हिस्सा होने की निशानी है।

الثَّلٰثَة यह पारे के तीन चौथाई हिस्सा होने की निशानी है।

السَّجْدَة यह तिलावत के सज्दे की निशानी है। क़ुर्आन में 15 जगहों पर तिलावत के दौरान सज्दा करना मसनून है।

ع ये रूकूअ की निशानी है।

'.... और क़ुर्आन ठहर-ठहर कर पढ़ा करो.' (सूरह मुज़म्मिल : 4)

क़ुर्आने करीम की तिलावत पूरे आदाब से करने के लिये तज्वीद के उसूलों की जानकारी होना ज़रूरी है. तज्वीद का इ़ल्म होने से क़ुर्आन की क़िरअत में निखार आता है.

आज मुसलमानों की ज़्यादातर आबादी अ़रबी ग्रामर से अंजान है. बहुत बड़ी ता'दाद ऐसे लोगों की है जो या तो क़ुर्आन पढ़ना नहीं जानते या फिर वे लफ़्ज़ों का स़हीह तलफ़्फ़ुज़ (उच्चारण) नहीं कर पाते. यह क़ाइदा हिन्दी मीडियम से अ़रबी क़ुर्आन की तिलावत को स़हीह तर्ज पर सीखना आसान बनाने की ग़र्ज़ से तैयार किया गया है. इसमें इ़ल्मे-तज्वीद के उसूलों को मिस़ालों के साथ समझाने की कोशिश की गई है.

इसके साथ ही हमने एक ऐसे क़ुर्आनी नुस्खे का प्रकाशन भी किया है जिसमें हर अ़रबी लफ़्ज़ के नीचे उसका हिन्दी उच्चारण लिखा गया है. यह क़ुर्आनी नुस्ख़ा हिन्दी भाषी लोगों के लिये काफ़ी मददगार स़ाबित होगा. इंशाअल्लाह! आपसे गुज़ारिश है कि अपनी दुआओं में हमें भी याद रखें और इस नेक काम में अपना तआ़वुन देकर अपनी आख़िरत को संवार लें.

99285 92786
98293 46786
98876 48000

आदर्श मुस्लिम पब्लिकेशन
30 स्टेडियम शॉपिंग सेण्टर, जोधपुर-6
www.publication.adarshmuslim.com

Qur'ani-Qa'ida
₹50.00